गरवी गुजरात

PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 055
दि. 24.06.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

टीएमसी में खुली बगावत, ममता का बड़ा प्रहार: आठ वरिष्ठ नेताओं की छुट्टी, बंगाल की राजनीति में बढ़ा भूचाल

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की सियासत में एक बार फिर बड़ा राजनीतिक विस्फोट देखने को मिला है। लंबे समय से अंदरखाने चल रही असंतोष की चिंगारी अब खुली बगावत में बदलती नजर आ रही है। तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) के भीतर नेतृत्व और संगठन को लेकर शुरू हुआ विवाद अब ऐसे मोड़ पर पहुंच गया है, जहां पार्टी की संस्थापक और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कठोर रुख अपनाते हुए आठ वरिष्ठ नेताओं को संगठन से निष्कासित कर दिया है। इस कार्रवाई को केवल अनुशासनात्मक कदम नहीं, बल्कि पार्टी के भीतर अपनी पकड़ मजबूत करने और बागी खेमे को स्पष्ट संदेश देने की रणनीति के रूप में देखा जा रहा है। ममता बनर्जी की इस कार्रवाई ने राज्य की राजनीति में हलचल मचा दी है। जिन नेताओं को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखाया गया है, उनमें जावेद अहमद खान, फिरहाद हकीम, अरूप रॉय, रथिन घोष, बिप्लब मित्रा, सबीना यास्मीन, अरूप बिस्वास और स्नेहाशीष चक्रवर्ती जैसे प्रभावशाली नाम शामिल हैं। ये सभी नेता लंबे समय से संगठन और सरकार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इतने बड़े स्तर पर की गई कार्रवाई यह संकेत देती है कि टीएमसी के भीतर संघर्ष अब केवल मतभेदों तक सीमित नहीं रह गया, बल्कि नेतृत्व की वैधता और संगठन के नियंत्रण की लड़ाई में बदल चुका है।

सूत्रों के अनुसार, पार्टी ने इन नेताओं को पहले कारण बताओ नोटिस जारी कर स्पष्टीकरण मांगा था। लेकिन जवाबों से संतुष्ट न होने के बाद संगठन ने उन्हें निष्कासित करने का फैसला लिया। हालांकि राजनीतिक गलियारों में चर्चा इस बात की है कि यह कार्रवाई उस घटनाक्रम के बाद तेज हुई, जब बागी गुट ने खुद को पार्टी का वास्तविक प्रतिनिधि बताते हुए समानांतर संगठनात्मक ढांचा खड़ा करने की कोशिश की।

दरअसल, पश्चिम बंगाल विधानसभा में विपक्ष के नेता ऋतब्रत बनर्जी के नेतृत्व में सक्रिय बागी गुट ने हाल ही में एक विशेष बैठक आयोजित कर नई संगठनात्मक संरचना की घोषणा की थी। इस बैठक में ऑल इंडिया तृणमूल कांग्रेस कमेटी और 30 सदस्यीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी के गठन का ऐलान किया गया। इतना ही नहीं, अरूप रॉय को सर्वसम्मति से पार्टी अध्यक्ष चुने जाने की घोषणा भी की गई। पूर्व मंत्री अरूप बिस्वास और फिरहाद हकीम को उपाध्यक्ष बनाने का प्रस्ताव रखा गया, जबकि कई अन्य नेताओं को नई कार्यकारिणी में शामिल किया गया।

इस घटनाक्रम ने राजनीतिक पर्यवेक्षकों को चौंका दिया, क्योंकि पहली बार टीएमसी के भीतर किसी समूह ने खुलकर समानांतर नेतृत्व संरचना की घोषणा की। इससे यह संकेत मिला कि असंतोष केवल कुछ व्यक्तियों तक सीमित नहीं है, बल्कि संगठन के भीतर एक प्रभावशाली धड़ा अलग दिशा में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है।

बागी खेमे की ओर से यह भी कहा गया कि वे ममता बनर्जी का सम्मान करते हैं और उन्हें संगठन का मार्गदर्शक एवं मेंटर बनाए रखना चाहते हैं। लेकिन साथ ही उन्होंने यह स्पष्ट संकेत दिया कि पार्टी के संचालन और भविष्य की रणनीति में बदलाव की आवश्यकता है। बागी नेताओं ने जिला स्तर तक नई समितियों के गठन की बात कहकर अपने राजनीतिक इरादों को और स्पष्ट कर दिया।

यहीं से संघर्ष और तीखा हो गया। ममता बनर्जी समर्थक गुट ने इसे पार्टी विरोधी गतिविधि करार दिया, जबकि बागी नेताओं ने दावा किया कि वास्तविक समर्थन उनके साथ है। दोनों पक्षों के बीच संगठन की वैधता को लेकर आरोप-प्रत्यारोप का दौर शुरू हो गया। ऋतब्रत बनर्जी ने यहां तक कहा कि असली संगठन वही है, जिसे पार्टी प्रतिनिधियों और कार्यकर्ताओं का समर्थन प्राप्त हो।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह संकट केवल व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं का परिणाम नहीं है। पिछले कुछ वर्षों में तृणमूल कांग्रेस के भीतर नेतृत्व की दूसरी पंक्ति को लेकर लगातार चर्चा होती रही है। अभिषेक बनर्जी की बढ़ती भूमिका, संगठन में शक्ति संतुलन और विभिन्न नेताओं के बीच प्रभाव क्षेत्र को लेकर असंतोष समय-समय पर सामने आता रहा है। लेकिन इस बार मामला पहले की तुलना में कहीं अधिक गंभीर दिखाई दे रहा है क्योंकि विवाद सीधे संगठनात्मक नियंत्रण तक पहुंच गया है।

ममता बनर्जी द्वारा की गई कार्रवाई का एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संदेश भी माना जा रहा है। पार्टी नेतृत्व यह दिखाना चाहता है कि संगठनात्मक अनुशासन से समझौता नहीं किया जाएगा और समानांतर संरचना खड़ी करने की किसी भी कोशिश को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। दूसरी ओर, बागी गुट के लिए यह कार्रवाई राजनीतिक अस्तित्व की लड़ाई को और तेज कर सकती है।

पश्चिम बंगाल की राजनीति पर नजर रखने वाले विशेषज्ञों का कहना है कि यदि यह टकराव लंबा खिंचता है तो इसका प्रभाव केवल टीएमसी तक सीमित नहीं रहेगा। विपक्षी दल भी इस स्थिति पर नजर बनाए हुए हैं और पार्टी के भीतर बढ़ती खाई का राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश कर सकते हैं। विशेष रूप से ऐसे समय में जब राज्य की राजनीति आगामी चुनावी चुनौतियों की ओर बढ़ रही है, टीएमसी के भीतर का यह संघर्ष पार्टी की चुनावी रणनीति और संगठनात्मक मजबूती दोनों को प्रभावित कर सकता है।

फिलहाल ममता बनर्जी ने यह स्पष्ट कर दिया है कि पार्टी में अंतिम निर्णय लेने का अधिकार उनके नेतृत्व के पास ही रहेगा। वहीं बागी गुट भी पीछे हटने के संकेत नहीं दे रहा है। ऐसे में पश्चिम बंगाल की राजनीति में आने वाले दिनों में और बड़े घटनाक्रम देखने को मिल सकते हैं। टीएमसी के भीतर शुरू हुआ यह सत्ता संघर्ष अब केवल संगठन का आंतरिक विवाद नहीं रह गया है, बल्कि राज्य की राजनीति की दिशा तय करने वाला एक महत्वपूर्ण राजनीतिक अध्याय बनता जा रहा है।

प्रेम, साजिश और मौत: मंगेतर को 400 फीट खाई में धकेलने का आरोप, पुणे हत्याकांड ने देश को झकझोरा

पुणे। महाराष्ट्र के पुणे जिले से सामने आए एक सनसनीखेज हत्याकांड ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया है। प्रेम संबंध, सगाई, शादी की तैयारियां और फिर एक सुनियोजित हत्या की कथित साजिश—इस मामले में सामने आ रहे खुलासे किसी अपराध कथा से कम नहीं हैं। पुलिस के अनुसार, 26 वर्षीय कारोबारी केतन विशाल अग्रवाल की हत्या उनकी मंगेतर सिया गोयल और उसके कथित प्रेमी चेतन चौधरी ने मिलकर की। आरोप है कि दोनों ने पहले कई दिनों तक हत्या की योजना बनाई और फिर लोहगढ़ किले की ट्रेकिंग के दौरान केतन को करीब 400 फीट गहरी खाई में धक्का देकर मौत के घाट उतार दिया।

इस घटना की तुलना इंदौर के चर्चित राजा रघुवंशी हत्याकांड से की जा रही है, क्योंकि दोनों मामलों में प्रेम संबंधों, विवाह से असहमति और सुनियोजित हत्या की आशंकाएं सामने आई हैं। पुलिस जांच में जो तथ्य सामने आए हैं, उन्होंने इस मामले को और भी रहस्यमय और गंभीर बना दिया है।

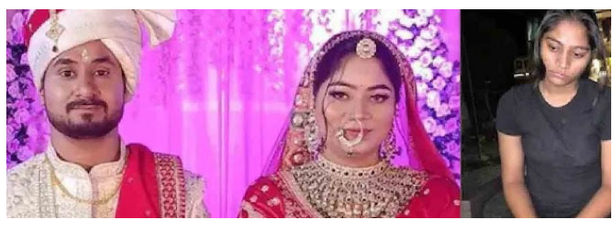

18 जून को केतन अग्रवाल अपनी मंगेतर सिया गोयल के साथ लोहगढ़ किले पर ट्रेकिंग के लिए गए थे। कुछ समय बाद खबर आई कि ट्रेकिंग के दौरान उनका पैर फिसल गया और वह गहरी खाई में गिर गए। घटना के तुरंत बाद इसे एक दुर्घटना माना गया। सिया ने भी पुलिस को यही बताया कि ट्रेकिंग के दौरान संतुलन बिगड़ने से केतन नीचे गिर गए। इसी आधार पर प्रारंभिक तौर पर आकस्मिक मृत्यु (एडीआर) का मामला दर्ज किया गया।

लेकिन जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ी, कहानी बदलती चली गई। पुलिस को कई ऐसे संकेत मिले जिन्होंने हादसे की थ्योरी पर सवाल खड़े कर दिए। मोबाइल फोन रिकॉर्ड, सोशल मीडिया चैट, कॉल डिटेल्स और दोनों आरोपियों की गतिविधियों की जांच के बाद मामला हत्या की साजिश की ओर मुड़ गया। जांच अधिकारियों का दावा है कि सिया और चेतन के बीच लंबे समय से घनिष्ठ संबंध थे और दोनों केतन के साथ होने वाली शादी से खुश नहीं थे।

पुलिस सूत्रों के अनुसार, सिया और केतन की शादी इसी वर्ष नवंबर में राजस्थान के उदयपुर स्थित एक भव्य पैलेस में होने वाली थी। दोनों परिवारों ने विवाह की तैयारियां शुरू कर दी थीं। शादी से पहले विदेश यात्रा, प्री-वेडिंग शूट और कई अन्य कार्यक्रमों की भी योजना बनाई गई थी। बाहर से सब कुछ सामान्य और खुशहाल दिखाई दे रहा था, लेकिन पर्दे के पीछे कथित तौर पर एक अलग कहानी चल रही थी।

जांच में सामने आया है कि हत्या की योजना एक दिन में नहीं बनी थी। पुलिस को ऐसे संकेत मिले हैं कि 14 जून को भी केतन को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया गया था। हालांकि वह योजना सफल नहीं हो सकी। इसके बाद कथित तौर पर दूसरी योजना बनाई गई और 18 जून को ट्रेकिंग के बहाने लोहगढ़ किले पर ले जाकर घटना को अंजाम दिया गया। अधिकारियों का कहना है कि यदि यह आरोप सिद्ध होते हैं तो यह दर्शाता है कि हत्या पूरी तरह पूर्व नियोजित थी।

सबसे चौंकाने वाला पहलू यह है कि जांच एजेंसियों को कथित रूप से एक तीसरी वैकल्पिक योजना के भी संकेत मिले हैं। हालांकि पुलिस ने अभी इसके बारे में आधिकारिक तौर पर विस्तृत जानकारी साझा नहीं की है, लेकिन जांचकर्ता यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि यदि खाई में धक्का देने की योजना भी विफल हो जाती तो आरोपियों ने आगे क्या करने की तैयारी कर रखी थी।

पुलिस का कहना है कि मोबाइल डेटा और डिजिटल साक्ष्य इस मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सोशल मीडिया संवाद, लोकेशन हिस्ट्री और कॉल रिकॉर्ड से दोनों आरोपियों के बीच लगातार संपर्क होने की पुष्टि हुई है। इन्हीं तथ्यों के आधार पर पहले चेतन चौधरी को हिरासत में लिया गया और पूछताछ की गई। बाद में सिया गोयल से भी गहन पूछताछ हुई, जिसके बाद दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया।

पद्म सम्मान समारोह में देश की 65 विभूतियों का गौरवपूर्ण अभिनंदन, राष्ट्रपति ने किया अलंकरण

नई दिल्ली। राष्ट्र निर्माण, जनसेवा, साहित्य, कला, खेल, विज्ञान और सामाजिक योगदान के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाली देश की प्रतिष्ठित हस्तियों को मंगलवार को राष्ट्रपति भवन में आयोजित भव्य समारोह में पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पद्म पुरस्कार समारोह के दूसरे चरण में 65 विशिष्ट व्यक्तित्वों को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मानों में शामिल पद्म विभूषण, पद्म भूषण और पद्मश्री अलंकरण प्रदान किए। इस अवसर पर राष्ट्रपति भवन का दरबार हॉल देश की विविध प्रतिभाओं और उपलब्धियों का साक्षी बना, जहां विभिन्न क्षेत्रों की नामचीन हस्तियों को उनके असाधारण योगदान के लिए सम्मानित किया गया।

समारोह के दूसरे चरण में कुल दो पद्म विभूषण, सात पद्म भूषण और 56 पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किए गए। यह सम्मान उन व्यक्तियों को दिए गए जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य कर समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्रिपरिषद के सदस्य, वरिष्ठ अधिकारी और विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित हस्तियां भी उपस्थित रहीं।

इस अवसर पर सुप्रीम कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश जस्टिस के.टी. थॉमस को जनसेवा और न्यायिक क्षेत्र में उनके दीर्घकालिक योगदान के लिए पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। न्यायपालिका में उनकी निष्पक्षता, संवैधानिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता और सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका को देखते हुए उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया। वहीं वरिष्ठ मलयालम पत्रकार पी. नारायणन को साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए पद्म विभूषण से अलंकृत किया गया। दशकों तक पत्रकारिता और साहित्य की सेवा करने वाले नारायणन को यह सम्मान उनके विशिष्ट कार्यों की राष्ट्रीय मान्यता माना जा रहा है।

समारोह का एक भावुक क्षण तब देखने को मिला जब झारखंड आंदोलन के प्रमुख नेता और राज्य के पहले मुख्यमंत्री रहे शिबू सोरेन को मरणोपरांत पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। उनकी ओर से उनकी पत्नी रूपी सोरेन ने राष्ट्रपति से यह सम्मान ग्रहण किया। इस दौरान उपस्थित लोगों ने तालियों के साथ उनके योगदान को याद किया। झारखंड राज्य के गठन और आदिवासी समाज के अधिकारों के लिए उनके लंबे संघर्ष को भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण अध्याय माना जाता है।

पद्मश्री सम्मान प्राप्त करने वालों में खेल, सिनेमा और संस्कृति जगत की कई चर्चित हस्तियां शामिल रहीं। भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रह चुके रोहित शर्मा को खेल क्षेत्र में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए पद्मश्री से सम्मानित किया गया। रोहित शर्मा ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में अपनी शानदार उपलब्धियों और भारतीय टीम को कई महत्वपूर्ण जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई है। उनके सम्मान से खेल जगत में खुशी की लहर देखी गई।

भारतीय सिनेमा जगत की प्रतिष्ठित हस्तियों में अभिनेता आर. माधवन और मलयालम सिनेमा के दिग्गज अभिनेता ममूटी को भी पद्मश्री से सम्मानित किया गया। दोनों कलाकारों ने भारतीय फिल्म उद्योग में अपने लंबे और प्रभावशाली करियर के दौरान अनेक यादगार भूमिकाएं निभाई हैं। उनकी उपलब्धियों को देखते हुए यह सम्मान फिल्म जगत के लिए भी गौरव का विषय माना जा रहा है।

पूर्व टेनिस खिलाड़ी विजय अमृतराज को भी पद्मश्री प्रदान किया गया। खेल के साथ-साथ सामाजिक और मानवीय कार्यों में उनकी सक्रिय भूमिका को देखते हुए उन्हें यह सम्मान दिया गया। भारतीय टेनिस को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में उनकी भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

समारोह के दौरान एक और दृश्य विशेष चर्चा का विषय बना। प्रसिद्ध पार्श्व गायिका अलका याग्निक जब अपना सम्मान ग्रहण करने पहुंचीं, तो उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लिया।

गाय ने चारे के साथ एक कील निगल ली, डॉक्टरों ने चुंबक की मदद से उसे सुरक्षित रूप से उसके मुंह से निकाल लिया

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। शहर में आवारा जानवर सड़क पर पड़े कचरे में से खाना ढूंढते हैं। ऐसे कई मामले सामने आए हैं जिनमें जानवरों ने उस खाने में मौजूद प्लास्टिक और बालों के गुच्छे खा लिए और बाद में उन्हें अपने पेट से बाहर निकाल दिया। ऐसे मामले अखबारों में भी छपे हैं।

लेकिन राजस्थान में एक गाय ने चारे के साथ कील निगल ली। इससे गाय की हालत बिगड़ गई। चारा खाने के बाद भी कील उसके पेट में फंसी रही। ऐसे में दो संभावनाएं हैं: एक तो सर्जरी करके कील को निकालना। दूसरा विकल्प है मल के रास्ते बाहर निकलने का इंतजार करना। हालांकि, कील लोहे की थी और नुकीली थी, इसलिए अगर वह पेट के अंदरूनी अंगों को फाड़कर अंदर चली गई, तो गाय को बचाना मुश्किल हो जाएगा। ऐसी स्थिति में, राजस्थान के डॉक्टरों ने जुगाड़ का एक तरीका अपनाया। मेटल डिटेक्टर की मदद से उन्होंने सबसे पहले यह पता लगाया कि कील गाय के पेट में कितनी अंदर तक गई है। मेटल डिटेक्टर से पता चला कि कील अभी भी पेट के पास ही है, इसलिए डॉक्टरों ने चुंबक का एक साधारण जुगाड़ आजमाया। जिस तरह मनुष्यों में पेट की एंडोस्कोपी के लिए उपकरण डाला जाता है, पशु चिकित्सकों ने गाय के साथ भी कुछ ऐसा ही किया। हालांकि, उन्नत ध्वनि उपकरणों के बजाय, इस उपकरण के सिरे पर एक मजबूत चुंबक लगाया गया। इस नली को गाय के मुंह में डाला गया। अंदर फंसी कील चुंबक से चिपक गई। इसके बाद, इसे धीरे-धीरे मुंह से बाहर निकाला गया। इस दौरान गाय का सिर एक पेड़ से बांध दिया गया ताकि वह बिल्कुल भी न हिले। कील निकलते ही गाय का चेहरा शांत हो गया और उसे दर्द से राहत मिली और वह हंसने लगी।

देश में अनियंत्रित बाल तस्करी सख्त कानूनों के बावजूद प्रतिदिन लापता हो रहे बच्चे चिंता का विषय हैं

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

हमारे देश में राष्ट्रीय अपराध ब्यूरो (NCBR) द्वारा हर साल आंकड़े जारी किए जाते हैं। इन आंकड़ों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि बाल तस्करी की घटनाएं कितनी व्यापक हैं। इनमें ज्यादातर वे बच्चे शामिल होते हैं जो घर से भाग गए हों, या बिछड़ गए हों या अपने परिवार से अलग हो गए हों, लेकिन अपहरण करने वाले गिरोहों के शिकार हुए बच्चों को ढूंढना बेहद मुश्किल होता है। और चौंकाने वाली बात यह है कि बाल तस्करी का यह अपराध देश भर में जारी है।

इस प्रकार, प्रतिदिन इतने बच्चे देश से लापता हो जाते हैं कि यदि राष्ट्रीय आंकड़ों की जांच की जाए तो चौंका देने वाले परिणाम सामने आएंगे। हालांकि आजकल नई तकनीक के कारण कई बच्चे मिल जाते हैं। लेकिन लापता बच्चों की संख्या भी बहुत अधिक है, जो चिंता का विषय है।

हाल ही में उत्तर गुजरात से भी बाल तस्करी का एक घोटाला सामने आया है। अस्पताल के कर्मचारियों की मिलीभगत से नवजात शिशुओं का अपहरण किया गया। लाखों रुपये में बच्चों को बेचकर पैसा कमाने वाले गिरोहों की खबरें आए दिन सामने आती रहती हैं। सरकार के कई दावों के बावजूद, देश में बाल तस्करी अभी भी बड़े पैमाने पर जारी है। इसका नेटवर्क न केवल देश के भीतर बल्कि सीमाओं के पार भी फैला हुआ है। विभिन्न राज्यों में सक्रिय गिरोह नवजात शिशुओं से लेकर छोटे बच्चों तक का अपहरण करते हैं और फिर उनका व्यापार करते हैं। और नई बात यह है कि चिकित्सा जगत के पेशेवर भी इन आपराधिक गतिविधियों में शामिल हैं। सवाल यह उठता है कि मानव तस्करी के खिलाफ सख्त कानूनों के बावजूद ये गिरोह इतनी आसानी से बच्चों का अपहरण और व्यापार कैसे कर पाते हैं? इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह पुलिस और निगरानी व्यवस्था की खामियों के कारण कर्तव्य में लापरवाही का नतीजा है।

इसके अलावा, कौन जानता है कि ऐसे कितने गिरोह अभी भी सक्रिय होंगे, क्योंकि देश में आज भी बच्चों के लापता होने या अपहरण की घटनाएं होती रहती हैं।

संपादकीय

भयावह जलवायु संकट

ब्राजील के बेलेम में संपन्न कॉप-30 सम्मेलन में जारी 'जलवायु जोखिम सूचकांक-2026' रिपोर्ट में उल्लेखित आंकड़े भारत से जुड़ी जलवायु संकट की भयावह तस्वीर दिखाते हैं। रिपोर्ट बताती है कि भारत दुनिया में जलवायु आपदाओं से सबसे ज्यादा प्रभावित पहले दस देशों में शामिल हैं। यह डराने वाली रिपोर्ट बताती है कि पिछले तीन दशक में भारत में आई जलवायु संकट से जुड़ी आपदाओं में करीब अस्सी हजार लोगों को मौत का ग्रास बनना पड़ा। इतना ही नहीं करीब 170 अरब अमेरिकी डॉलर का नुकसान भी देश को उठाना पड़ा है। ये आंकड़े जलवायु संकट के देश पर पड़ने वाले घातक प्रभावों की तस्वीर उकेरते हैं। जो बताते हैं कि इस संकट से उबरने के प्रयासों में और तेजी लाने की जरूरत है। निश्चित तौर पर इस दिशा में यदि युद्ध स्तरीय प्रयास तेज नहीं किए जाते तो भविष्य में परिणाम और घातक हो सकते हैं। ये प्रयास केवल सरकारी स्तर पर ही नहीं, सामाजिक स्तर पर भी तेज करने की जरूरत है। जागरूकता अभियानों में भी तेजी लाने की जरूरत है। इस संकट ने फसलों पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव से हमारी खाद्य श्रृंखला पर भी संकट मंडरा सकता है। हमें 140 करोड़ से अधिक आबादी वाले देश का पेट भरने के लिये इस दिशा में शोध-अनुसंधान के साथ व्यापक किसान जागरूकता कार्यक्रम भी चलाने की जरूरत है। दरअसल, जलवायु संकट के चलते देश में जो ज्यादा नुकसान हुआ है, उसके पीछे लगातार आ रहे चक्रवात, कुछ इलाकों में सूखे और बाढ़ की लगातार पैदा होती स्थितियां हैं। जाहिर इसके मूल में तेजी से बढ़ता वातावरण का तापमान ही है। जिसका मुख्य कारक ग्लोबल वार्मिंग ही है। निश्चित रूप से भारत में जलवायु संकट की स्थिति लगातार विकट होती जा रही है। निर्विवाद रूप से देश के सामने पैदा मौसमी आपदाओं से हमारे विकास में भी बाधा उत्पन्न हो रही है। जो जीविका संकट भी पैदा कर रहा है। दरअसल, बेलेम में संपन्न कॉप-30 सम्मेलन में जारी की गई 'जलवायु जोखिम सूचकांक-2026' रिपोर्ट उन संकटपूर्ण स्थितियों का भी खुलासा करती है जो जलवायु संकट के कारण पैदा हो रहे हैं। रिपोर्ट बताती है कि पिछले वर्ष भारी बारिश व विनाशक रूप में आई बाढ़ से देश में करीब अस्सी लाख लोग बुरी तरह प्रभावित हुए हैं। इसमें दो राय नहीं कि भारत सरकार ने जलवायु संकट से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी के समक्ष अपनी प्रतिबद्धता बार-बार जतायी है। इस संकट से उबरने के लिये नवीकरणीय ऊर्जा के विकल्प को युद्ध स्तर पर आगे बढ़ाने का प्रयास भी किया है। देश में कार्बन उत्सर्जन को कम करने में नवीकरणीय ऊर्जा की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। देश वनों का दायरा को भी बढ़ाने की जरूरत है। विकास देश की प्राथमिकता है, लेकिन यह विकास वनों के विनाश की कीमत पर नहीं होना चाहिए। साथ ही इस दिशा में जो भी कदम उठाये जाएं उनका प्रभाव जमीनी स्तर पर कितना हो रहा है, इस बात का लगातार मूल्यांकन भी जरूरी है। साथ ही रीति-नीतियों को प्रभावी तरीकों से अमलीजामा पहनाने की जरूरत होगी। जिसके लिये लोकतंत्र की सबसे छोटी इकाइयों ग्राम पंचायत से लेकर शहरी निकायों को भी शामिल करने की जरूरत होगी। दरअसल, जलवायु परिवर्तन से उपजा संकट केवल भारत की ही चुनौती नहीं है। यह एक वैश्विक संकट है। जो इस बात से पता चलता है कि पिछले तीन दशकों में नौ हजार से अधिक मौसमी आपदाओं ने पूरी दुनिया में आठ लाख से अधिक लोगों को असमय काल का ग्रास बनाया है। लेकिन इस संकट की सबसे बड़ी विडंबना यही है कि इसकी सबसे बड़ी कीमत वे विकासशील व गरीब देश चुका रहे हैं, जिनकी वैश्विक कार्बन उत्सर्जन में सबसे कम भूमिका रही है। दुर्भाग्य से विकासशील देश जहां इन संकटों की दृष्टि से जहां ज्यादा संवेनशील हैं, वहीं इससे मुकाबले के लिये उनके संसाधन सीमित हैं। उनके प्रतिरोध की क्षमता सीमित है। जिन्हें तत्काल व्यापक वित्तीय सहायता की जरूरत है। ऐसे में विकसित देशों का नैतिक दायित्व बनता है कि उनका सहयोग सिर्फ विकासशील देशों को वित्तीय व तकनीकी सहयोग तक सीमित न रहे। साथ ही वे अपने कार्बन उत्सर्जन में भी कमी लाएं।

युद्धविराम से आगे: क्या विश्व अहिंसा की ओर बढ़ेगा?

> इजरायल के लिए यह स्थिति राजनीतिक रूप से असहज है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू लंबे समय से ईरान की परमाणु और मिसाइल क्षमताओं को अपने देश के अस्तित्व के लिए खतरा बताते रहे हैं। इजरायल को आशा थी कि युद्ध के माध्यम से ईरान की सामरिक क्षमता को निर्णायक रूप से कमजोर किया जाएगा।

अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच हाल ही में हुआ युद्धविराम ऐसे समय में सामने आया है, जब पश्चिम एशिया युद्ध की लपटों में घिरकर वैश्विक स्थिरता के लिए सबसे बड़ा खतरा बन चुका था। कई सप्ताह तक चले संघर्ष ने क्षेत्र को ऐसे ज्वालामुखी में बदल दिया था, जिसकी प्रत्येक विस्फोटक घटना विश्व अर्थव्यवस्था को झकझोर रही थी। तेल बाजारों में भारी उथल-पुथल थी, निवेशकों में घबराहट बढ़ रही थी और वैश्विक मंदी की आशंकाएं गहराने लगी थीं। ऐसे में युद्धविराम ने विश्व को तत्काल राहत तो दी है, लेकिन सबसे बड़ा प्रश्न यही है कि क्या यह समझौता स्थायी शांति की नींव बनेगा या केवल अगले युद्ध से पहले का एक अस्थायी विराम सिद्ध होगा? इतिहास साक्षी है कि युद्धविराम और शांति समझौते तभी टिकाऊ सिद्ध होते हैं, जब उनके पीछे केवल सामरिक विवशता नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, पारस्परिक विश्वास और मानवता के प्रति प्रतिबद्धता भी हो। अन्यथा वे केवल संघर्षों के बीच का अंतराल बनकर रह जाते हैं। पश्चिम एशिया का इतिहास ऐसे असंख्य समझौतों का गवाह है, जो कागजों पर तो बने, लेकिन जमीन पर टिक नहीं सके। इस युद्ध के परिणामों का विश्लेषण किया जाए तो सबसे बड़ा लाभार्थी ईरान दिखाई देता है। अमेरिका और इजरायल के सैन्य दबाव, आर्थिक प्रतिबंधों और अंतरराष्ट्रीय अलगाव के बावजूद तेहरान न केवल अपने राजनीतिक ढांचे को बचाने में सफल रहा, बल्कि उसने अपने विरोधियों को वार्ता की मेज पर आने के लिए भी बाध्य किया। ईरान अब अपने नागरिकों के समक्ष यह दावा कर सकता है कि उसने दुनिया की सबसे शक्तिशाली सैन्य ताकतों के सामने घुटने नहीं टेके। ईरानी नेतृत्व इसे प्रतिरोध की जीत के रूप में प्रस्तुत करेगा। दूसरी ओर इस संघर्ष ने अमेरिका की अजेयता की छवि को भी चुनौती दी है। वियतनाम, इराक और

अफगानिस्तान के बाद यह एक और अवसर है, जिसने यह स्पष्ट किया कि केवल सैन्य शक्ति राजनीतिक परिणाम सुनिश्चित नहीं कर सकती। वाशिंगटन ने दबाव बनाया, अपनी सैन्य क्षमता का प्रदर्शन किया, लेकिन अंततः उसे वार्ता और समझौते का रास्ता अपनाना पड़ा। इससे यह संदेश गया है कि इक्कीसवीं सदी की दुनिया अब केवल शक्ति संतुलन से नहीं, बल्कि संवाद, कूटनीति और बहुपक्षीय सहयोग से संचालित होगी।

इजरायल के लिए यह स्थिति राजनीतिक रूप से असहज है। प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू लंबे समय से ईरान की परमाणु और मिसाइल क्षमताओं को अपने देश के अस्तित्व के लिए खतरा बताते रहे हैं। इजरायल को आशा थी कि युद्ध के माध्यम से ईरान की सामरिक क्षमता को निर्णायक रूप से कमजोर किया जाएगा। किंतु युद्धविराम के बाद ईरान स्वयं को विजेता के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। इससे इजरायल के भीतर यह बहस और तीव्र हो सकती है कि क्या क्षेत्रीय सुरक्षा चिंताओं की तुलना में महाशक्तियों ने अपने सामरिक हितों को अधिक महत्व दिया। भारत के लिए यह समझौता विशेष महत्व रखता है। भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं के लिए पश्चिम एशिया पर अत्यधिक निर्भर है। युद्ध की स्थिति में तेल आपूर्ति बाधित होने, समुद्री व्यापार मार्गों पर संकट उत्पन्न होने और कीमतों में वृद्धि की आशंका ने भारत की चिंता बढ़ा दी थी। युद्धविराम से तेल कीमतों पर दबाव कम होगा, महंगाई नियंत्रित रहेगी और खाड़ी देशों में कार्यरत लाखों भारतीयों की सुरक्षा संबंधी चिंताएं भी घटेंगी। लेकिन भारत का महत्व केवल एक उपभोक्ता राष्ट्र के रूप में नहीं है, वह आज वैश्विक शांति के एक नैतिक प्रवक्ता के रूप में भी उभर रहा है।

दरअसल, यह युद्ध एक बड़े प्रश्न को जन्म देता है-क्या मानव सभ्यता युद्धों के सहारे अपने भविष्य का निर्माण कर सकती है? आज महाशक्तियों ने ऐसी विनाशकारी सैन्य क्षमता अर्जित कर ली है कि किसी भी देश की एक छोटी-सी भूल संपूर्ण मानवता को विनाश की ओर धकेल सकती है। परमाणु हथियारों, जैविक अस्त्रों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित युद्ध प्रणालियों के युग में युद्ध अब केवल सीमाओं का प्रश्न नहीं रह गया है, वह समूची मानव सभ्यता के अस्तित्व का प्रश्न बन गया है। यही कारण है कि आज दुनिया को शक्ति की नहीं, शांति की राजनीति की आवश्यकता है। हिंसा, युद्ध, आतंकवाद और शस्त्रीकरण की प्रतिस्पर्धा ने मानवता को भय, अविश्वास और असुरक्षा के गर्त में धकेल दिया है। यदि विश्व को बचाना है, तो उसे निःशस्त्रीकरण, अहिंसा, सह-अस्तित्व और संवाद की दिशा में आगे बढ़ना ही होगा।

इस संदर्भ में भारत की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाती है। भारत ने सदैव विश्व को शांति, करुणा और अहिंसा का संदेश दिया है। महात्मा गांधी ने कहा था, 'आंख के बदले आंख पूरे विश्व को अंधा बना देगी।' आज यह कथन पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो उठा है। भारत की सांस्कृतिक चेतना 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सिद्धांत पर आधारित रही है, जो सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानती है। यही कारण है कि भारत ने सदैव युद्ध के स्थान पर संवाद और टकराव के स्थान पर सहमति का समर्थन किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी विश्व के अनेक मंचों पर स्पष्ट रूप से कहा है कि 'यह युग युद्ध का नहीं है।' संयुक्त राष्ट्र, जी-20, ब्रिक्स तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत ने बार-बार इस बात पर बल दिया है कि किसी भी समस्या का समाधान युद्ध नहीं, बल्कि वार्ता है। यदि अंततः देशों को बातचीत की मेज पर ही लौटना पड़ता है, तो युद्ध की भयावह कीमत चुकाने की आवश्यकता ही क्या है?

भारत की विदेश नीति आज एक नए स्वरूप में सामने आ रही है। रूस-यूक्रेन युद्ध हो, इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष हो अथवा पश्चिम एशिया का वर्तमान संकट-भारत ने किसी पक्ष विशेष का अंध समर्थन करने के बजाय संतुलन, संवाद और शांतिपूर्ण समाधान की नीति अपनाई है। यही संतुलित दृष्टिकोण भविष्य में भारत को वैश्विक मध्यस्थ की भूमिका निभाने की दिशा में अग्रसर कर सकता है। लेकिन केवल सरकारें ही शांति स्थापित नहीं कर सकतीं। शांति का आधार समाजों, संस्कृतियों और मनुष्यों के भीतर निर्मित होता है। जब तक राष्ट्रवाद आक्रामकता का रूप लेता रहेगा, जब तक हथियार उद्योग युद्धों को लाभ का साधन बनाकर चलता रहेगा और जब तक राजनीतिक नेतृत्व युद्ध को लोकप्रियता अर्जित करने के उपकरण के रूप में उपयोग करता रहेगा, तब तक स्थायी शांति का सपना अधूरा रहेगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व समुदाय कुछ ठोस कदम उठाए-परमाणु एवं सामरिक हथियारों की होड़ को नियंत्रित किया जाए, संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को अधिक प्रभावी बनाया जाए, अंतरराष्ट्रीय विवादों के समाधान के लिए स्थायी संवाद तंत्र विकसित किए जाएं और शिक्षा प्रणालियों में शांति एवं अहिंसा के मूल्यों को शामिल किया जाए। साथ ही युद्ध अर्थव्यवस्था के स्थान पर मानव कल्याण आधारित विकास मॉडल को प्राथमिकता दी जाए। अमेरिका, इजरायल और ईरान के बीच हुआ युद्धविराम निश्चय ही राहत का क्षण है, किंतु इसे स्थायी शांति में परिवर्तित करना अभी शेष है। यदि यह केवल सामरिक पुनर्संरचना का चरण बनकर रह गया, तो भविष्य में और भी अधिक विनाशकारी संघर्षों का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। लेकिन यदि विश्व समुदाय इस अवसर को आत्ममंथन का क्षण मानकर अहिंसा, संवाद और सह-अस्तित्व की नई वैश्विक संस्कृति विकसित करता है, तो यह युद्धविराम मानव इतिहास के एक नए अध्याय का प्रारंभ भी बन सकता है। दुनिया को आज युद्ध का अंधेरा नहीं, शांति का उजाला चाहिए। मानवता के समक्ष यही सबसे बड़ी चुनौती है और यही सबसे बड़ा अवसर भी।

प्रेरणा

वर्तमान पर भरोसा ही जीवन का सबसे बड़ा साहस

जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि मनुष्य वर्तमान में जीते हुए भी अपना अधिकांश समय भविष्य की चिंताओं और अतीत की स्मृतियों में खो देता है। वह उन घटनाओं के बारे में परेशान रहता है जो अभी घटी ही नहीं हैं और उन बातों पर दुखी होता रहता है जिन्हें बदला नहीं जा सकता। इसी कारण उसके भीतर भय, असुरक्षा और तनाव जन्म लेते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि जीवन का वास्तविक अस्तित्व केवल वर्तमान क्षण में है। जो व्यक्ति वर्तमान पर विश्वास करना सीख लेता है, उसके भीतर ऐसा आत्मबल पैदा हो जाता है जो किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना कर सकता है। एक घने वन के बीच स्थित आश्रम में एक वृद्ध साधु निवास करते थे। उनका जीवन अत्यंत सरल था। दूर-दूर से लोग उनके पास अपनी समस्याएँ लेकर आते, लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि वे लंबे-लंबे प्रवचन नहीं देते थे। वे केवल कुछ शब्दों में या किसी छोटे से अनुभव के माध्यम से लोगों को जीवन का गहरा सत्य समझा देते थे।

एक दिन एक युवक उनके पास आया। उसके चेहरे पर चिंता की रेखाएँ साफ दिखाई दे रही थीं। उसने साधु को प्रणाम किया और बोला, "गुरुदेव, मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि मेरे जीवन में कमी क्या है। मैंने अच्छी शिक्षा प्राप्त की है, मैं मेहनती हूँ, मेरे पास अवसर भी हैं, फिर भी मेरे मन में हर समय एक डर बना रहता है। मुझे लगता है कि कहीं मैं असफल न हो जाऊँ, कहीं भविष्य खराब न हो जाए, कहीं मेरे सारे प्रयास व्यर्थ न हो जाएँ। यह भय मेरा पीछा नहीं छोड़ता।" साधु ने उसकी पूरी बात शांत भाव से सुनी, लेकिन कुछ नहीं बोले। वे उठे और युवक को अपने साथ जंगल की ओर चलने का संकेत दिया। युवक उनके पीछे-पीछे चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर वे एक पुराने और टूटे हुए पुल के पास पहुँचे। पुल के कई हिस्से क्षतिग्रस्त थे और उसे देखकर ही डर महसूस होने लगता था। उसके नीचे गहरी खाई थी।

साधु ने आसपास पड़ी लकड़ियों को उठाना शुरू किया और पुल के टूटे हिस्सों पर एक-एक करके रखने लगे। फिर वे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। युवक यह देखकर घबरा गया। उसने चिंतित होकर कहा, "गुरुदेव, यह बहुत खतरनाक है। अगर लकड़ी खिसक गई तो हम नीचे गिर सकते हैं। क्या यह जोखिम लेना उचित है?"

साधु मुस्कराए, लेकिन चलते रहे। कुछ कदम आगे बढ़ने के बाद उन्होंने युवक की ओर देखा और कहा, "डर इसलिए नहीं लगता क्योंकि पुल टूटा हुआ है। डर इसलिए लगता है क्योंकि हमें अपने अगले कदम पर विश्वास नहीं होता।" युवक उनके पीछे-पीछे सावधानी से चलने लगा। हर कदम रखते समय उसका ध्यान केवल उस लकड़ी पर था जिस पर वह पैर रख रहा था। धीरे-धीरे वे दोनों सुरक्षित पुल पार कर गए। जब वे दूसरी ओर पहुँचे तो युवक के चेहरे पर राहत थी। अब उसके मन का भय काफी हद तक कम हो चुका था। लौटते समय साधु ने कहा, "जीवन भी इसी पुल की तरह है। कोई भी व्यक्ति पूरे जीवन का रास्ता एक साथ नहीं देख सकता। भविष्य हमेशा अधूरा और अनिश्चित दिखाई देता है। यदि तुम बार-बार यह सोचते रहोगे कि आगे क्या होगा, तो भय तुम्हें घेर लेगा। लेकिन यदि तुम अपना ध्यान वर्तमान कदम पर केंद्रित करोगे, तो रास्ता स्वयं बनता चला जाएगा। जो व्यक्ति ईमानदारी, परिश्रम और विश्वास के साथ वर्तमान में अपना कर्तव्य निभाता है, उसके लिए भविष्य धीरे-धीरे सुरक्षित होता जाता है।" युवक लंबे समय तक उन शब्दों के बारे में सोचता रहा। उसे एहसास हुआ कि उसका अधिकांश भय वास्तविक नहीं था। वह उन संभावनाओं से डर रहा था जो शायद कभी घटित ही न हों। उसने समझा कि साहस का अर्थ भविष्य की हर परिस्थिति को पहले से जान लेना नहीं है। साहस का अर्थ है वर्तमान क्षण में अपना सर्वश्रेष्ठ देना और परिणाम के प्रति अनावश्यक चिंता न करना। वास्तव में यही समस्या आज अधिकांश लोगों के जीवन में दिखाई देती है। विद्यार्थी परीक्षा से पहले ही असफलता के डर में घिर जाते हैं। नौकरी करने वाला व्यक्ति भविष्य की अनिश्चितताओं से परेशान रहता है। व्यवसायी बाजार की संभावित समस्याओं को लेकर चिंतित रहता है। माता-पिता अपने बच्चों के भविष्य के बारे में अत्यधिक चिंता करते हैं। हर कोई उस कल को नियंत्रित करना चाहता है जो अभी आया ही नहीं है। लेकिन भविष्य को पूरी तरह नियंत्रित करना किसी के हाथ में नहीं है। जब मनुष्य वर्तमान को छोड़कर भविष्य में भटकने लगता है, तब उसका मन कमजोर होने लगता है। वह अपनी ऊर्जा कल्पनाओं और आशंकाओं में खर्च कर देता है। इसके विपरीत जो व्यक्ति वर्तमान पर ध्यान देता है, वह अपनी शक्ति को सही दिशा में उपयोग करता है। वह जानता है कि उसके हाथ में केवल वर्तमान कर्म है। भविष्य उन्हीं कर्मों का परिणाम बनकर सामने आएगा। भारतीय दर्शन भी इसी सत्य को बार-बार दोहराता है। श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि मनुष्य का अधिकार केवल कर्म पर है, फल पर नहीं। इसका अर्थ यही है कि हमें अपना पूरा ध्यान वर्तमान कार्य पर केंद्रित करना चाहिए। जब व्यक्ति वर्तमान में अपना श्रेष्ठ कर्म करता है, तब भविष्य की चिंता स्वतः कम होने लगती है। वर्तमान पर विश्वास करना कोई साधारण बात नहीं है। इसके लिए आत्मविश्वास, धैर्य और आंतरिक स्थिरता की आवश्यकता होती है। जब परिस्थितियाँ अनुकूल होती हैं, तब विश्वास बनाए रखना आसान होता है। लेकिन जब रास्ता धुंधला दिखाई देता है, चुनौतियाँ सामने खड़ी होती हैं और परिणाम अनिश्चित होते हैं, तब भी जो व्यक्ति आगे बढ़ता रहता है, वही वास्तविक अर्थों में साहसी कहलाता है। जीवन का प्रत्येक दिन हमें यही शिक्षा देता है कि हमें पूरा मार्ग देखने की आवश्यकता नहीं है। हमें केवल इतना देखना है कि अगला कदम कहाँ रखना है। यदि हम प्रत्येक कदम समझदारी, ईमानदारी और विश्वास के साथ रखते जाएँ, तो धीरे-धीरे लंबी से लंबी यात्रा भी पूरी हो जाती है। पर्वत की ऊँचाइयाँ, समुद्र की गहराइयाँ और सफलता की मंजिलें भी उन्हीं लोगों को मिलती हैं जो वर्तमान क्षण को पूरी निष्ठा से जीना जानते हैं। इसलिए जब भी मन में भविष्य का भय जन्म ले, उस टूटे हुए पुल की कल्पना कीजिए। याद रखिए कि जीवन का पूरा रास्ता एक साथ दिखाई देना आवश्यक नहीं है। आवश्यक केवल इतना है कि वर्तमान कदम दृढ़ता से रखा जाए। जो व्यक्ति वर्तमान पर विश्वास करना सीख लेता है, उसके लिए भय की जगह साहस, चिंता की जगह शांति और असमंजस की जगह आत्मविश्वास जन्म लेता है। यही विश्वास धीरे-धीरे उसे उस मंजिल तक पहुँचा देता है जिसकी वह लंबे समय से तलाश कर रहा होता है। वर्तमान पर भरोसा ही जीवन की सबसे बड़ी शक्ति है, और यही शक्ति मनुष्य को असंभव दिखाई देने वाले मार्गों पर भी आगे बढ़ने का साहस देती है।

जानलेवा बनती शिलाखंडों की बारहमासी बरसात

आजकल उत्तराखंड व हिमाचल में कई जगहों पर बरसात हो न हो, अचानक शिलाखण्डों का गिरना, पत्थरों के मलबों की बौछारों का होना असामान्य नहीं है। जब ये किसी वाहन, व्यक्ति या घर पर गिर जाते हैं और जानमाल की क्षति हो जाती है तो खबर हो जाती है। अन्यथा खाली सड़क पर या निर्जन क्षेत्रों में हों तो ये आम भूस्खलन भर मान लिये जाते हैं। कभी देखते ही देखते विशालकाय पर्वत खण्डों का ऐसा ढहना होता है कि लगता है कि जैसे पूरा का पूरा पहाड़ ही जमीन पर आ जायेगा। हर साल पहाड़ों से गिरते पत्थर लोगों को ही नहीं, पशुधन को भी हताहत कर देते हैं। इस साल भी उत्तराखंड में जून माह में ही ऐसी कई घटनाओं में मौतें भी हुई हैं व वाहन भी दबे हैं।

पहाड़ों में सड़कें जैसे-जैसे चौड़ी की जाने लगती हैं तो पहाड़ों को ज्यादा गहराई तक काटना होता है। पहाड़ों या शिलाओं को तोड़ने के लिए विस्फोटों का उपयोग भी आवश्यक हो जाता है। ऐसे में सड़कों पर आपदायें भी ज्यादा गहराने लगती हैं। जगह-जगह ऐसे लिखे बोर्ड लगे हैं कि सड़कों के इन हिस्सों में रुके रहना भी खतरनाक है। वाहन चालकों के लिए सलाह लिखी रहती है—रुकें, देखें, तब चलें।

चिंताजनक यह है कि कुछ क्षेत्रों में भूवैज्ञानिकों व अभियंताओं के सुझाये उपायों के क्रियान्वयन के बाद सालों साल से भूस्खलन रुकता ही नहीं है। यह हर मौसम में लगातार होता रहता है। यहां मार्ग बन्द होते, खुलते, फिर बंद होते रहते हैं। इनके पास मलबा हटाने वाली मशीनों व कर्मियों को नियमित तैनाती भी कर दी जाती है। सड़कों के खुलने पर भी पहाड़ी पर अटके जमा टनों मलबे से पत्थर भी गिरते रहते हैं। पैदल यात्री व वाहन जोखिमों के साये में ऊपर खिसकते मलबे पर टकटकी लगाये भूस्खलन क्षेत्रों को पार करते हैं। काम भर सड़क खोलने की जल्दी में मुख्यतः दो बातें होती हैं। ये दोनों बातें कभी भी पत्थरों की अचानक बौछारों के जोखिम भी बढ़ा देते हैं। एक है मशीनों से जैसे-तैसे पहाड़ों को गहराई तक काट वाहनों की आवाजाही के लिए राह देने के दबावों के बीच मलबा कटान व उत्खनन से अपेक्षाकृत स्थिर ढाल भी अस्थिर बन जाते हैं। पहाड़ों में भूस्खलनों को हटाने के लिए विस्फोट भी करना पड़ता है। लेकिन उन्हें स्थिर करने या रोक दीवार बनाने का आवश्यक काम उपेक्षित रह जाता है। जल्दी में यह हो भी नहीं सकता है। जिन दिनों भूस्खलन से कुछ राहत रहती है तब भी नहीं किया जाता है। इस कारण शुष्क दिनों में भी भूस्खलन होता रहता है। ऐसे में भारी बोल्डर्स भी जब-तब लुढ़कते रहते हैं। दूसरा है कि सड़क खोलने में ज्यादा देर न हो, इसलिये कुछ मलबा पहाड़ी में ही छूटा रहने दिया जाता है। यह भी किसी क्षेत्र को लगातार भूस्खलन जोन बना देता है। भूस्खलन का मलबा, जो पूरी तरह से नीचे न लाया गया या न आ पाया हो वह बरसातों में, मशीनी कम्पनों या भूकम्पकीय सक्रिय क्षेत्रों में छोटे भूकम्पों से भी पुनः ढहना शुरू कर सकता है।

निरंतरता वाले भूस्खलन वाले क्षेत्रों से गिरने वाले अधिकांश पत्थर या शिलाखंड वे होते हैं जिन्हें बांधे रखने में मिट्टी व कंकर बजरी आदि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बरसातों में पत्थरों को बांधे मिट्टी जब बहने लगती है तो पुनः पत्थर, शिलाखण्डों की बौछारें शुरू हो जाती हैं।

पहाड़ी जलागम वृक्षविहीन हो रहे हैं। इससे भी भूस्खलनों व भूक्षरण में कमी लाना मुश्किल हो जाता है। ढलानों पर पत्थर मलबा कई बार केवल झाड़ियों या पेड़ों के कारण टिके रहते हैं जिन्होंने उनके लुढ़कने के राहों पर अंकुश लगा दिया होता है। किन्तु जब जंगलों की आग इन झाड़ियों, पेड़ों को जला देती है तो इनके सहारे रुके शिलाओं, मलबे का एकाएक फिर से ढहना शुरू हो जाता है। गर्मियों के माह की वनाग्नियों के बाद की बरसातें मलबा ढहने को और तेज कर देती हैं। भूस्खलन आखिर गुरुत्वाकर्षण शक्ति के वशीभूत मलबा ढहना ही तो है। उन पहाड़ियों की दरारों में जिन पर मलबा टिका है, बरसाती पानी के घुसने से भी दरारों में फैलाव आ जाता है। दरार खण्डित भूखण्डों का टूटना तेज हो जाता है। परिणामस्वरूप भूस्खलन व मलबा बिखराव पुनः प्रारंभ हो जाता है। अतः लगातार बने भूस्खलन जोखिमों के क्षेत्र में, वैज्ञानिकों की राय लेकर बरसाती जल की उचित ड्रेनेज व्यवस्था बनाना जरूरी है। भूस्खलन रोकथाम पर लगभग तीन सौ करोड़ रुपयों के खर्चे के बाद भी जिला मुख्यालय उत्तरकाशी में शहर के बीचोंबीच स्थित वरुणाव्रत पहाड़ी से दो दशकों से भूस्खलन रह-रहकर हो ही जाते हैं। पहली बार सितम्बर, 2003 को इस पहाड़ी से बड़ा भूस्खलन हुआ था। पहाड़ी के जड़ में बसे सौ से ज्यादा घर दुकान होटल पूरी तरह से मलबे के नीचे आ गये थे। सौ से ज्यादा अन्य निजी व सरकारी भवन भी क्षतिग्रस्त हुए थे। करीब तीन हजार लोगों का विस्थापन हुआ था। 28 अगस्त, 2018 को फिर यहां भूस्खलन होना शुरू हो गया थ्ाा।

दरअसल, भारत और यूरेशिया प्लेटों के बीच टकराव से बने हिमालयी पहाड़ों में अस्थिरता भी लगातार के भूस्खलनों व भूकम्पों की संभावनाएं बढ़ाती हैं।

अभियान

गणेश की पदचापों से गूंजती देवभूमि: उत्तराखंड में जीवित हैं जन्म, ज्ञान और लोकआस्था की अनूठी कथाएँ

जब भी भगवान गणेश का स्मरण होता है, मन में विघ्नहर्ता, बुद्धि के देवता और प्रथम पूज्य की छवि उभरती है। भारत के प्रत्येक क्षेत्र में उनकी पूजा की अपनी अलग परंपरा है, लेकिन उत्तराखंड में गणेशजी का स्वरूप केवल धार्मिक श्रद्धा तक सीमित नहीं है। यहाँ वे लोकविश्वास, हिमालयी संस्कृति, प्राचीन वास्तुकला, तीर्थ परंपरा और पौराणिक इतिहास के ऐसे केंद्र में स्थापित हैं, जहाँ धर्म और लोकजीवन एक-दूसरे में घुल-मिल जाते हैं। देवभूमि की ऊँची चोटियाँ, गहरी घाटियाँ, प्राचीन गुफाएँ, शांत झीलें और सदियों पुराने मंदिर आज भी गणेशजी से जुड़ी उन कथाओं को संजोए हुए हैं, जो इस भूमि को विशेष पहचान प्रदान करती हैं।

उत्तराखंड की संस्कृति में गणेशजी का प्रभाव इतना व्यापक है कि उनकी उपस्थिति केवल मंदिरों तक सीमित नहीं रही। पहाड़ों में सदियों पहले बने पारंपरिक घरों को देखें तो उनके मुख्य प्रवेश द्वारों पर लकड़ी की सुंदर नक्काशी दिखाई देती है। इन नक्काशियों में सबसे अधिक स्थान भगवान गणेश को दिया गया है। स्थानीय भाषा में घर के मुख्य द्वार को "खोली" कहा जाता है और इन द्वारों पर उकेरी गई गणेश प्रतिमाओं को "खोली का गणेश" कहा जाता है।

यह केवल कलात्मक अभिव्यक्ति नहीं थी। पहाड़ के लोगों का विश्वास था कि घर के द्वार पर गणेशजी की उपस्थिति परिवार को संकटों से बचाती है, समृद्धि लाती है और नकारात्मक शक्तियों को दूर रखती है। इसलिए जब भी कोई नया घर बनाया जाता था, तो काष्ठ शिल्पी सबसे पहले गणेश की आकृति तैयार करते थे। यह परंपरा बताती है कि उत्तराखंड में गणेशजी केवल पूजाघरों के देवता नहीं, बल्कि दैनिक जीवन के अभिन्न संरक्षक रहे हैं।

देवभूमि की धार्मिक मान्यताओं में एक अत्यंत रोचक विश्वास यह भी है कि भगवान गणेश का जन्म इसी हिमालयी क्षेत्र में हुआ था। उत्तरकाशी जिले का डोडीताल इस मान्यता का प्रमुख केंद्र है। समुद्र तल से लगभग तीन हजार मीटर की ऊँचाई पर स्थित यह झील प्रकृति और आध्यात्मिकता का अद्भुत संगम प्रस्तुत करती है। चारों ओर फैले देवदार, भोजपत्र और ओक के जंगल इसे रहस्यमयी सौंदर्य प्रदान करते हैं।

स्थानीय लोककथाओं के अनुसार माता पार्वती इस झील में स्नान किया करती थीं। यहीं उन्होंने अपने शरीर के उबटन से एक बालक की रचना की और उसे अपनी कुटिया के द्वार की रक्षा का दायित्व सौंपा। वही बालक आगे चलकर भगवान गणेश कहलाया। इस कारण डोडीताल को गणेशजी का जन्मस्थल माना जाता है। आज भी हजारों श्रद्धालु इस झील तक कठिन पैदल यात्रा कर पहुँचते हैं और उस स्थान को नमन करते हैं, जहाँ गणेशजी के प्राकट्य की कथा जीवित मानी जाती है।

डोडीताल के निकट स्थित प्राचीन मंदिर इस आस्था का केंद्र है। यहाँ भगवान गणेश के साथ माता अन्नपूर्णा की भी पूजा होती है। स्थानीय लोग गणेशजी को "डोडी राजा" कहकर संबोधित करते हैं। उनके लिए यह केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि अपनी सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक भी है। झील के आसपास के क्षेत्रों में आज भी अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं, जो गणेशजी और माता पार्वती से जुड़ी घटनाओं का वर्णन करती हैं।

भगवान गणेश के जीवन की सबसे प्रसिद्ध घटना उनके मस्तक विच्छेदन और पुनर्जीवन की कथा है। उत्तराखंड में इस घटना से जुड़ा एक ऐसा मंदिर है, जो पूरे भारत में अद्वितीय माना जाता है। गौरीकुंड और सोनप्रयाग के बीच स्थित मुंडकटिया गणेश मंदिर इसी कथा का जीवंत स्मारक है।

पौराणिक मान्यता के अनुसार जब गणेशजी ने भगवान शिव को माता पार्वती के आदेश के कारण भीतर प्रवेश करने से रोक दिया, तब शिव क्रोधित हो उठे और उन्होंने गणेशजी का सिर काट दिया। बाद में माता पार्वती के विलाप और देवताओं के अनुरोध पर शिव ने हाथी के बच्चे का मस्तक लगाकर गणेशजी को पुनर्जीवित किया। माना जाता है कि जहाँ उनका कटा हुआ सिर गिरा था, वही स्थान आज मुंडकटिया गणेश मंदिर के रूप में प्रसिद्ध है।

इस मंदिर की विशेषता यह है कि यहाँ गणेशजी की सिरविहीन प्रतिमा स्थापित है। भारत में शायद ही कोई दूसरा मंदिर हो जहाँ गणेशजी की पूजा इस स्वरूप में होती हो। केदारनाथ यात्रा पर जाने वाले श्रद्धालु यहाँ रुककर दर्शन करते हैं और अपनी यात्रा की सफलता की कामना करते हैं। स्कंद पुराण में भी इस स्थान का उल्लेख विनायक तीर्थ के रूप में मिलता है, जिससे इसकी प्राचीनता और धार्मिक महत्व का पता चलता है।

केदारनाथ धाम में भी भगवान गणेश का विशेष स्थान है। मंदिर के मुख्य द्वार के समीप स्थित गणपति केदार की प्रतिमा श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत पूजनीय है। मान्यता है कि भगवान केदारनाथ के दर्शन से पहले गणपति केदार का आशीर्वाद लेना आवश्यक है। यह परंपरा इस तथ्य को पुष्ट करती है कि गणेशजी को प्रत्येक शुभ कार्य में प्रथम स्थान प्राप्त है।

गणपति केदार की प्रतिमा एक ही पत्थर पर उकेरी गई है और अपनी दिव्यता के कारण विशेष आकर्षण का केंद्र है। वर्ष 2013 की भीषण आपदा में जब केदारनाथ क्षेत्र में व्यापक विनाश हुआ, तब यह प्रतिमा भी मलबे में दब गई थी। बाद में इसे सुरक्षित निकाला गया और पुनः स्थापित किया गया। इस घटना को अनेक श्रद्धालु गणेशजी की कृपा और चमत्कार के रूप में देखते हैं।

उत्तराखंड की गणेश परंपरा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष ज्ञान और साहित्य से जुड़ा हुआ है। बदरीनाथ धाम के समीप स्थित गणेश गुफा भारतीय संस्कृति के सबसे महान साहित्यिक अध्यायों में से एक की साक्षी मानी जाती है। सरस्वती नदी के किनारे स्थित यह गुफा उस पौराणिक कथा से जुड़ी है जिसमें महर्षि वेदव्यास ने महाभारत और अन्य ग्रंथों का उच्चारण किया था तथा भगवान गणेश ने उन्हें लिपिबद्ध किया था।

कहा जाता है कि व्यासजी ने गणेशजी से महाभारत लिखने का आग्रह किया। गणेशजी ने शर्त रखी कि वे बिना रुके लिखेंगे और व्यासजी को भी बिना रुके बोलना होगा। व्यासजी ने बदले में यह शर्त रखी कि गणेशजी प्रत्येक श्लोक का अर्थ समझने के बाद ही उसे लिखेंगे। इसी प्रकार महाभारत जैसे महान ग्रंथ की रचना हुई।

आज भी गणेश गुफा और समीप स्थित व्यास गुफा श्रद्धालुओं को उस युग की स्मृति से जोड़ती हैं। यहाँ पहुँचने वाला प्रत्येक व्यक्ति भारतीय ज्ञान परंपरा की महानता को अनुभव करता है। यह स्थान बताता है कि गणेशजी केवल विघ्नहर्ता ही नहीं, बल्कि ज्ञान, लेखन और बौद्धिक चेतना के भी अधिष्ठाता हैं।

बदरीनाथ धाम के मंदिर परिसर में स्थित गणेश मंदिर भी विशेष महत्व रखता है। कपाट खुलने से लेकर कपाट बंद होने तक यहाँ नियमित पूजा-अर्चना होती है। एक विशेष परंपरा के अनुसार शीतकाल के लिए बदरीनाथ मंदिर बंद होने की प्रक्रिया में सबसे पहले गणेश मंदिर के कपाट बंद किए जाते हैं। यह परंपरा उनके प्रथम पूज्य स्वरूप का प्रतीक मानी जाती है।

चमोली जिले में स्थित कलुवा विनायक मंदिर भी गणेश भक्ति का एक अद्भुत केंद्र है। समुद्र तल से लगभग 14,500 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह मंदिर विश्व के सबसे ऊँचे गणेश मंदिरों में गिना जाता है। रूपकुंड ट्रेक मार्ग पर स्थित यह स्थल साहस, श्रद्धा और प्रकृति के अनूठे संगम का प्रतीक है।

मंदिर में स्थापित गणेशजी की प्रतिमा काले पत्थर की बनी हुई है। इसी कारण उन्हें कलुवा या केलवा विनायक कहा जाता है। स्थानीय लोगों का विश्वास है कि यहाँ पूजा करने के बाद ही कठिन पर्वतीय यात्रा आरंभ करनी चाहिए। अनेक पर्वतारोही और ट्रेकर्स भी इस परंपरा का पालन करते हैं। उनके लिए यह मंदिर केवल धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और सुरक्षा का प्रतीक है।

उत्तराखंड की विशेषता यह है कि यहाँ गणेशजी की पूजा किसी एक रूप में सीमित नहीं है। कहीं वे जन्मदाता माता पार्वती के पुत्र के रूप में पूजे जाते हैं, कहीं ज्ञान के प्रतीक के रूप में, कहीं मार्गदर्शक और रक्षक के रूप में, तो कहीं परिवार और समाज के संरक्षक के रूप में। यही विविधता उन्हें देवभूमि के जनजीवन के और अधिक निकट ले आती है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmdabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

शाला प्रवेशोत्सव 2026

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वडनगर के बी.एन. हाईस्कूल से राज्यव्यापी 24वें 'शाला प्रवेशोत्सव' का प्रारंभ किया, यह वही स्कूल है जहां प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी

प्रधानमंत्री का जीवन इस बात की शानदार मिसाल है कि एक साधारण परिवार का विद्यार्थी भी मेहनत, संकल्प और शिक्षा के दम पर बड़ी सफलता हासिल कर सकता है : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में शिक्षा, कौशल और विकास के क्षेत्र में नए अवसर खुले
- शिक्षा में टेक्नोलॉजी के उपयोग से हर बच्चा अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करे, इसके लिए सरकार की प्रतिबद्धता के साथ ही अभिभावकों का भी उतना ही दायित्व है
- 2003 में शुरू हुए शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केळवणी अभियान के चलते शिक्षा क्षेत्र में उल्लेखनीय बदलाव आया, ड्रॉपआउट रेश्यो 37 से घटकर 1 फीसदी से भी कम हो गया
- मुख्यमंत्री ने बच्चों को मोबाइल और टीवी का सीमित उपयोग करते हुए समय पर आयोजन के साथ पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने की सीख दी
- बेटियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा क्रियान्वित की गई 'नमो लक्ष्मी' और 'नमो सरस्वती' जैसी योजनाओं के सकारात्मक परिणाम मिले हैं

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल 'शाला प्रवेशोत्सव' के 24वें संस्करण का मंगलवार को वडनगर के बी.एन. हाईस्कूल से प्रारंभ किया। यह वही स्कूल है जहां प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी स्कूली शिक्षा प्राप्त की थी।

शिक्षा सेवा यज्ञ के तुल्य इस अभियान के तहत मेहसाणा जिले के वडनगर के ऐतिहासिक बी.एन. हाईस्कूल में आयोजित एक कार्यक्रम में 390 बच्चों का स्कूल में नामांकन किया गया।

मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का जीवन इस बात की शानदार मिसाल है कि एक साधारण परिवार का विद्यार्थी भी अपनी मेहनत, संकल्प और शिक्षा के दम पर जीवन में बड़ी सफलता हासिल कर सकता है। उनके नेतृत्व में शिक्षा, कौशल और विकास के क्षेत्र में नए अवसर खुले हैं।

मुख्यमंत्री ने शाला प्रवशोत्सव के श्रेष्ठ परिणाम के बारे में कहा कि 2003 में तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी ने शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केळवणी जैसे महत्वपूर्ण अभियान शुरू किए थे। इसके परिणामस्वरूप राज्य के शिक्षा क्षेत्र में आमूल बदलाव आया है। एक दौर था जब बड़ी संख्या में बच्चे बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़ देते थे, लेकिन निरंतर प्रयासों और शिक्षा के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी के कारण आज स्कूलों में नामांकन दर 100 फीसदी तक पहुंच गई है और ड्रॉपआउट रेश्यो घटकर 1 फीसदी से भी कम हो गया है।

मुख्यमंत्री ने शिक्षकों को इस बात के लिए बधाई दी कि वडनगर के स्कूल के ऐसे 24 बच्चों को ढूंढ़कर उनका फिर से दाखिला कराया गया, जिन्होंने किसी कारण से बीच में ही अपनी पढ़ाई छोड़ दी थी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि टेक्नोलॉजी और शिक्षकों के निरंतर प्रयासों के चलते स्कूल छोड़ चुके बच्चों को ढूंढ़कर उन्हें फिर से शिक्षा के साथ जोड़ा जा रहा है। यदि कोई विद्यार्थी एक-दो दिन अनुपस्थित रहता है, तो शिक्षक अभिभावकों से संपर्क करके बच्चे की अनुपस्थिति को लेकर चिंता व्यक्त करते हैं। उन्होंने इस मौके पर यह अनुरोध किया कि हर बच्चा स्कूली शिक्षा पूरी करे, इसके लिए सरकार के साथ-साथ अभिभावकों की भी उतनी ही जिम्मेदारी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बेटियों की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 'नमो लक्ष्मी' और 'नमो सरस्वती' जैसी योजनाएं क्रियान्वित की हैं, जिनके सकारात्मक परिणाम बहुत ही कम समय में देखने को मिले हैं। 'नमो लक्ष्मी' योजना के अंतर्गत कक्षा 9 से 12 तक अध्ययनरत बेटियों को 50,000 रुपए और 'नमो सरस्वती' योजना के तहत, विज्ञान संकाय में अध्ययनरत छात्राओं को 25,000 रुपए की प्रोत्साहक आर्थिक सहायता दी जाती है। मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देते हुए कहा कि उन्हें मोबाइल और टीवी का सीमित उपयोग करते हुए पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि समय का उचित आयोजन, माता-पिता का आदर और शिक्षा के प्रति निष्ठा के जरिए जीवन में सफलता प्राप्त की जा सकती है।

इस कार्यक्रम की खासियत यह थी कि मंच संचालन, महानुभावों का स्वागत और धन्यवाद ज्ञापन जैसी सारी व्यवस्थाएं स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा ही संभाली गई थी। मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों के इस कौशल की प्रशंसा की।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने होनहार विद्यार्थियों तथा कला एवं खेल क्षेत्र में उपलब्धि हासिल करने वाले प्रतिभाशाली विद्यार्थियों का सम्मान किया।

इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों ने शिक्षा के साथ-साथ सामाजिक जिम्मेदारी के एक भाग के रूप में यातायात के नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा ली। कार्यक्रम के अंत में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने स्कूल प्रांगण में पौधरोपण करके पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने स्कूल प्रबंधन समिति (एसएमसी) और संचालक मंडल के सदस्यों के साथ बैठक करके शैक्षणिक गुणवत्ता को लेकर परामर्श किया।

इस राज्यव्यापी प्रवेशोत्सव के अवसर पर विधायक श्री किरीटभाई पटेल, वडनगर नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती मितिका शाह, तहसील पंचायत अध्यक्ष श्री कानुजी ठाकोर, अग्रणी श्री गिरीशभाई राजगोर, श्री भरतभाई डांगर, जिला कलेक्टर श्री एस. के. प्रजापति, जिला विकास अधिकारी सुश्री अंचू विल्सन, स्कूल के प्राचार्य, शिक्षक, अभिभावक और बड़ी संख्या में विद्यार्थी इस शिक्षण उत्सव में सहभागी हुए।

वडनगर में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने 'प्रेरणा संकुल' की भेंट की : विद्यार्थियों के साथ किया जीवंत संवाद

- शाला प्रवेशोत्सव के अवसर पर मुख्यमंत्री ने वडनगर की ऐतिहासिक स्कूल के नूतन शैक्षणिक प्रकल्प का निरीक्षण किया
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रारंभिक पाठशाला अब 'प्रेरणा' के माध्यम से देश के युवाओं के लिए बनी मार्गदर्शक
- विद्यार्थियों की रचनात्मक गतिविधियों और आधुनिक शिक्षा पद्धति के बारे में मुख्यमंत्री ने प्राप्त की विस्तृत जानकारी

गांधीनगर : मेहसाणा जिले के ऐतिहासिक नगर वडनगर में आयोजित राज्यव्यापी शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम में भाग लेने के बाद मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मंगलवार को 'प्रेरणा संकुल' की गरिमापूर्ण भेंट की। मुख्यमंत्री ने इस संकुल परिसर का निरीक्षण कर वहां संचालित विभिन्न शैक्षणिक एवं रचनात्मक गतिविधियों का अवलोकन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने विद्यार्थियों द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों में गहरी रुचि दिखाई तथा उनके साथ आत्मीय संवाद स्थापित किया और संकुल की शैक्षणिक कार्यप्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त की।

प्रेरणा संकुल वडनगर की उसी ऐतिहासिक प्राथमिक विद्यालय इमारत के जीर्णोद्धार की एक अनूठी पहल है, जहां देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की थी। वर्ष 1888 में स्थापित इस ऐतिहासिक विद्यालय को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) द्वारा भविष्य की आधुनिक शैक्षणिक संस्था के रूप में पुनर्विकसित किया गया है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों और आम नागरिकों में विकास तथा परिवर्तन की प्रेरणादायी भावना को सुदृढ़ करना है। यह संकुल केवल एक शैक्षणिक भवन नहीं है, बल्कि प्रधानमंत्री के दृष्टिकोण के अनुरूप देशभर के विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता और मूल्यों का विकास करने का एक माध्यम है। इस प्रेरणा संकुल में अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ अनुभवात्मक शिक्षा प्रदान की जाती है। यहां का विशिष्ट पाठ्यक्रम मुख्य रूप से दैनिक जीवन के नौ मूल्यों पर आधारित है। यह कार्यक्रम भारत के सभी जिलों के विद्यार्थियों और शिक्षकों को एक सूत्र में जोड़कर सांस्कृतिक और शैक्षणिक आदान-प्रदान के लिए एक सशक्त मंच प्रदान करता है।

सरकारी स्कूल में प्रवेश लेने वाले बच्चों के चेहरे पर दिखाई देने वाली खुशी ही प्रवेशोत्सव अभियान की सच्ची उपलब्धि है : उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी

- हमें केवल स्कूल नहीं चलाना है, बल्कि बच्चों के जीवन का निर्माण कर उनका भविष्य उज्ज्वल बनाना है: उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी
- उप मुख्यमंत्री ने अडालज की 3 स्कूलों के 402 नन्हे विद्यार्थियों का शाला प्रवेशोत्सव कराया : अभिभावकों और शिक्षकों को दिए प्रेरक सुझाव

गांधीनगर : उप मुख्यमंत्री श्री हर्ष संघवी ने कहा कि स्कूल के पहले दिन बच्चों के चेहरों पर दिखाई देने वाली खुशी और उत्साह ही शाला प्रवेशोत्सव अभियान की सच्ची उपलब्धि है। राज्यव्यापी शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केळवणी महोत्सव के अंतर्गत उप मुख्यमंत्री ने मंगलवार को गांधीनगर जिले के अडालज की कुमार प्राथमिक विद्यालय से अडालज क्षेत्र की 3 सरकारी स्कूलों के कुल 402 विद्यार्थियों का उत्साहपूर्वक शाला प्रवेश कराया।

इस अवसर पर निजी स्कूलों की तुलना में सरकारी स्कूलों की सकारात्मक तुलना करते हुए उप मुख्यमंत्री ने कहा कि निजी स्कूलों की बड़ी एसी बसों में जाने वाले बच्चे अक्सर स्कूल के पहले दिन रोते हुए दिखाई देते हैं। इसके विपरीत; सरकारी स्कूलों में आयोजित प्रवेशोत्सव के कारण पहले ही दिन सभी बच्चे बहुत खुश, हंसते और खेलते हुए नजर आते हैं। उन्होंने कहा कि गुजरात के बच्चे उत्साह और आत्मविश्वास के साथ स्कूल में प्रवेश करें; इस उद्देश्य से शुरू किए गए इस अभियान की इस वर्ष 24वीं कड़ी मनाई जा रही है, जिसके माध्यम से राज्य के लाखों विद्यार्थियों का जीवन बदला है।

उन्होंने शिक्षकों और अभिभावकों को संबोधित करते हुए कहा कि हम सभी को मिलकर केवल स्कूल नहीं चलाना है, बल्कि बच्चों के जीवन का निर्माण कर उनके भविष्य को अधिक उज्ज्वल बनाना है। उन्होंने कक्षा 10, 11 और 12 के विद्यार्थियों तथा अभिभावकों से एसएमसी (एसएमसी) के माध्यम से स्कूल के विकास में सहभागी बनने का अनुरोध किया। साथ ही शिक्षकों से अपील की कि वे छोटे बच्चों को पहले दिन से ही स्वच्छता, नियमित रूप से ब्रश करना तथा खेलने के बाद हाथ धोना जैसी अच्छी आदतें दैनिक जीवन में अपनाना सिखाएं।

बच्चों को सड़क सुरक्षा और हेलमेट का अनोखा संकल्प दिलाया

कार्यक्रम के दौरान उप मुख्यमंत्री ने उपस्थित सभी विद्यार्थियों को एक अनोखा और संवेदनशील संकल्प दिलाया। उन्होंने बच्चों को प्रेरित करते हुए कहा कि जिनके माता-पिता सुबह दोपहिया वाहन पर नौकरी या काम के लिए जाते हों और यदि उन्होंने हेलमेट नहीं पहना हो, तो बच्चों को घर के दरवाजे पर पालथी मारकर बैठ जाना चाहिए और माता-पिता को हेलमेट पहनने के लिए मजबूर करना चाहिए। काम पर 5 मिनट देर से पहुंचने से उतना नुकसान नहीं होगा, लेकिन हेलमेट के बिना दुर्घटना होने पर पूरा जीवन माता-पिता के बिना बिताना पड़ सकता है।

उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यदि विद्यार्थी स्वयं हेलमेट पहनने पर जोर देंगे, तो अडालज तथा समग्र गुजरात में कोई भी नागरिक बिना हेलमेट के दिखाई नहीं देगा। इस सराहनीय प्रयास से पुलिस का कार्य भी आसान होगा और जुर्माना न लगने के कारण परिवारों के पैसे की बचत होगी। पुलिस के लिए चालान की रसीद से अधिक नागरिकों की सुरक्षा और उनके परिवारों की सुरक्षा सर्वोपरि है। कार्यक्रम के अंत में उपस्थित सभी नागरिकों और अधिकारियों ने सड़क सुरक्षा संबंधी शपथ ली। इस गरिमामय कार्यक्रम में अडालज की सरपंच श्रीमती विनीताबेन पटेल, जिला पंचायत के अध्यक्ष श्री राजेशकुमार पटेल, कलेक्टर श्री रवींद्र खटाले, एसपी श्री रवि तेजा वासमशेट्टी, एसएमसी के सदस्य, स्थानीय अग्रणी, शिक्षक, अभिभावक एवं बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

गुजरात के बच्चों की रचनात्मकता को मिलेंगे 'पेटेंट' के पंख : चिल्ड्रन्स रिसर्च यूनिवर्सिटी के 'किडनोवेशन' प्रोजेक्ट का शुभारंभ

- प्रोजेक्ट के तहत पूरे गुजरात से चुने गए 100 प्रतिभाशाली बच्चों के रचनात्मक विचारों का मूल्यांकन करने के बाद 20 से 30 नवोन्मेषी विचारों के लिए प्रोविजनल पेटेंट फाइल किए जाएंगे : डॉ. टी.एस. जोशी, कुलपति, चिल्ड्रन्स रिसर्च यूनिवर्सिटी
- राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में, गुजरात में शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा और रचनात्मकता पर विशेष बल दिया जा रहा है
- चिल्ड्रन्स रिसर्च यूनिवर्सिटी तत्कालीन मुख्यमंत्री और मौजूदा पीएम श्री नरेन्द्र मोदी का विचार बीज था : उनकी दूरदर्शी सोच देश के बच्चों में रचनात्मकता विकसित करने और हमारी शिक्षा व्यवस्था के जरिए बच्चों की नवाचार क्षमता को बढ़ावा देने पर केंद्रित रही है

गांधीनगर : गुजरात के बच्चों में अंतर्निहित नवाचार की क्षमता को बढ़ावा देने और उनके विचारों को बौद्धिक संपदा (इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी) के तौर पर विकसित करने के उद्देश्य से चिल्ड्रन्स रिसर्च यूनिवर्सिटी (सीआरयू) 'किडनोवेशन' नामक एक अनोखा प्रोजेक्ट शुरू करने जा रही है। 23 जून, 2026 को शिक्षाविद गिजुभाई बधेका की 87वीं पुण्यतिथि के अवसर पर इस प्रोजेक्ट का शुभारंभ होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के दिशानिर्देशों के अनुरूप यह पहल बच्चों में रचनात्मकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अनुभव-आधारित शिक्षण को बढ़ावा देगी। प्रोजेक्ट का प्रमुख उद्देश्य बच्चों के नवोन्मेषी विचारों को सुव्यवस्थित तरीके से डॉक्यूमेंट करके उन्हें पेटेंट के रूप में परिवर्तित करना है।

चिल्ड्रन्स रिसर्च यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. टी.एस. जोशी ने कहा, "इस प्रोजेक्ट के अंतर्गत पूरे गुजरात से 100 प्रतिभाशाली बच्चों को चुना जाएगा। चयनित बच्चों को प्रोटोटाइपिंग, डिजाइन और नवाचार के संबंध में विशेष प्रशिक्षण दिया जाएगा। उनके रचनात्मक विचारों का मूल्यांकन करने के बाद 20 से 30 नवोन्मेषी विचारों के लिए भारतीय पेटेंट कार्यालय में प्रोविजनल पेटेंट फाइल किए जाएंगे। खास बात यह है कि पेटेंट का सौ फीसदी स्वामित्व बच्चों के नाम पर ही रहेगा।"

चिल्ड्रन्स रिसर्च यूनिवर्सिटी के प्रशिक्षण केंद्र के निदेशक श्री निलेश पंड्या ने कहा, "प्रोजेक्ट के दौरान सभी 100 बच्चों की नवाचार यात्रा का दस्तावेजीकरण करके 'किडनोवेशन लॉग' तैयार किया जाएगा, जिसे गुरुपीडिया प्लेटफॉर्म पर एक स्थायी आर्काइव के रूप में उपलब्ध कराया जाएगा। इसके अलावा, प्राथमिक शिक्षा में इंटेलेक्चुअल प्रॉपर्टी विकास के लिए एक नीति-आधारित व्हाइट पेपर भी तैयार करके गुजरात सरकार के शिक्षा विभाग के सुपुर्द किया जाएगा।" उल्लेखनीय है कि राज्य के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के नेतृत्व में गुजरात में शिक्षा में भारतीय ज्ञान परंपरा और रचनात्मकता पर विशेष बल दिया जा रहा है। प्रोजेक्ट की अवधि 23 जून से 15 नवंबर, 2026 तक होगी। जुलाई और अगस्त महीने के दौरान आइडिया स्काउटिंग यानी नए विचारों की तलाश और मार्गदर्शन कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे, जबकि सितंबर में नए विचारों का वैज्ञानिक मूल्यांकन और फिल्टरिंग की जाएगी। 15 और 16 अक्टूबर को डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के जन्मदिवस के अवसर पर चिल्ड्रन्स रिसर्च यूनिवर्सिटी में दो दिवसीय रेजिडेंशियल प्रोटोटाइप बूट कैंप आयोजित होगा, जिसमें लगभग 50 बच्चे हिस्सा लेंगे। प्रोजेक्ट के कार्यान्वयन में विभिन्न संस्थानों का सहयोग लिया जाएगा। ये संस्थान पेटेंट ड्राफ्टिंग, प्रोटोटाइपिंग, इनोवेशन स्क्रीनिंग, शिक्षक समन्वय और दस्तावेजीकरण में अहम भूमिका निभाएंगे। यह 'किडनोवेशन' प्रोजेक्ट गुजरात में बाल इनोवेशन की एक नई संस्कृति विकसित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। इस पहल के जरिए राज्य के बच्चे केवल विचारों तक ही सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि अपने नवोन्मेषी विचारों को वैज्ञानिक और कानूनी मान्यता दिलाकर भविष्य के इनोवेटर के रूप में उभर सकेंगे।

रात की रौनक: नाइट क्रीम से पाएं स्वस्थ, कोमल और दमकती त्वचा - शहनाज़ हुसैन

सुंदर और स्वस्थ त्वचा केवल महंगे सौंदर्य प्रसाधनों का परिणाम नहीं होती, बल्कि सही देखभाल, संतुलित जीवनशैली और त्वचा की आवश्यकताओं को समझने पर भी निर्भर करती है। दिनभर की भागदौड़, मानसिक तनाव, धूल-मिट्टी, प्रदूषण और बदलती जीवनशैली का सबसे अधिक प्रभाव हमारी त्वचा पर पड़ता है। सुबह से शाम तक त्वचा लगातार बाहरी आक्रमणों का सामना करती है, जिसके कारण वह अपनी प्राकृतिक चमक और कोमलता खोने लगती है। यही कारण है कि रात के समय त्वचा की विशेष देखभाल को अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। रात्रि वह समय होता है जब हमारा शरीर विश्राम की अवस्था में पहुंचता है और त्वचा स्वयं को पुनर्जीवित करने की प्रक्रिया शुरू करती है। वैज्ञानिक शोध भी बताते हैं कि रात के दौरान त्वचा की कोशिकाएं तेजी से पुनर्निर्माण करती हैं। इसलिए इस समय त्वचा को उचित पोषण और नमी प्रदान की जाए तो उसका प्रभाव कहीं अधिक बेहतर दिखाई देता है। यही भूमिका नाइट क्रीम निभाती है। नाइट क्रीम त्वचा को गहराई से पोषण देकर उसे मुलायम, स्वस्थ और चमकदार बनाने में सहायता करती है। अक्सर महिलाएं दिन के समय विभिन्न प्रकार की क्रीमों का उपयोग करती हैं, लेकिन मेरा मानना है कि सौंदर्य की दृष्टि से नाइट क्रीम का महत्व कहीं अधिक है। दिन में लगाई जाने वाली क्रीम को धूप, धूल और प्रदूषण का सामना करना पड़ता है, जबकि रात में त्वचा अपेक्षाकृत सुरक्षित रहती है। सोते समय हम बार-बार चेहरे को नहीं छूते और न ही त्वचा बाहरी प्रदूषण के संपर्क में आती है। परिणामस्वरूप क्रीम में मौजूद पोषक तत्व पूरी रात त्वचा में समाहित होकर अपना कार्य करते रहते हैं। लगभग आठ से दस घंटे तक त्वचा को लगातार पोषण मिलने से उसका प्रभाव अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

हालांकि नाइट क्रीम का चयन बहुत सोच-समझकर करना चाहिए। आज बाजार में विभिन्न प्रकार की नाइट क्रीम उपलब्ध हैं, जिनमें एंटी-एजिंग, मॉइस्चराइजिंग, स्किन रिपेयर और ब्राइटनिंग जैसे अनेक विकल्प मौजूद हैं। फिर भी कई बार घरेलू सामग्री से बनी नाइट क्रीम अधिक सुरक्षित, किफायती और प्रभावी साबित होती है। प्राकृतिक तत्वों से तैयार क्रीम न केवल त्वचा को पोषण देती है, बल्कि रासायनिक दुष्प्रभावों की संभावना भी कम कर देती है। नाइट क्रीम मूल रूप से एक पोषक क्रीम होती है, जो त्वचा में नमी बनाए रखने की क्षमता बढ़ाती है। यह त्वचा को कोमल और मुलायम बनाती है तथा रूखेपन को दूर करती है। कई नाइट क्रीम में ऐसे तत्व भी होते हैं जो बढ़ती उम्र के प्रभावों को कम करने में सहायता करते हैं। नियमित उपयोग से झुर्रियां, फाइन लाइन्स और त्वचा की शुष्कता में कमी आ सकती है। इसलिए इसे एंटी-एजिंग केयर का भी महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

हालांकि नाइट क्रीम हर प्रकार की त्वचा के लिए समान रूप से उपयुक्त नहीं होती। सामान्य और शुष्क त्वचा वाले लोगों को इससे विशेष लाभ मिलता है क्योंकि उनकी त्वचा को अतिरिक्त नमी और पोषण की आवश्यकता होती है। दूसरी ओर अत्यधिक तैलीय त्वचा या बार-बार मुंहासे होने की समस्या वाले लोगों को भारी और तैलीय क्रीमों से बचना चाहिए। ऐसी त्वचा पर अत्यधिक क्रीम लगाने से रोमछिद्र बंद हो सकते हैं, जिससे ब्लैकहेड्स, व्हाइटहेड्स और मुंहासों की समस्या बढ़ सकती है।

सामान्य रूप से 25 वर्ष की आयु के बाद नाइट क्रीम का उपयोग शुरू किया जा सकता है। इस उम्र के बाद त्वचा में प्राकृतिक नमी और कोलेजन का स्तर धीरे-धीरे कम होने लगता है। इसलिए समय रहते उचित देखभाल शुरू करना लाभकारी रहता है।

नाइट क्रीम लगाने से पहले चेहरे की अच्छी तरह सफाई करना बेहद आवश्यक है। चेहरे पर मौजूद मेकअप, धूल, तेल और प्रदूषण के कणों को हटाकर त्वचा को पूरी तरह स्वच्छ करें। इसके बाद हल्के हाथों से क्रीम लगाकर चेहरे और गर्दन पर मालिश करें। मालिश से रक्तसंचार बेहतर होता है और क्रीम त्वचा में आसानी से अवशोषित हो जाती है।

घरेलू नाइट क्रीम के रूप में एलोवेरा सबसे लोकप्रिय और प्रभावी विकल्पों में से एक है। सामान्य और तैलीय त्वचा के लिए एलोवेरा जेल में कुछ बूंदें नींबू का रस मिलाकर रात को लगाने से त्वचा तरोताजा और कोमल बनी रहती है। सुबह ताजे पानी से चेहरा धो लेने पर त्वचा में प्राकृतिक चमक दिखाई देती है।

शुष्क त्वचा वाले लोग एलोवेरा जेल में कुछ बूंदें सुगंधित तेल मिलाकर उपयोग कर सकते हैं। यह मिश्रण त्वचा को गहराई से पोषण देता है और उसकी प्राकृतिक आभा को बढ़ाता है। एक अन्य प्रभावी नुस्खा है—दो चम्मच एलोवेरा जेल, एक चम्मच ऑलिव ऑयल और दो चम्मच दूध पाउडर को मिलाकर गाढ़ा पेस्ट तैयार करना। इस मिश्रण को रात में चेहरे और गर्दन पर लगाकर छोड़ दें और सुबह धो लें। नियमित उपयोग से त्वचा में नमी और चमक दोनों बढ़ती हैं। एवोकाडो और अंडे से बनी नाइट क्रीम भी अत्यंत पौष्टिक मानी जाती है। आधे पके एवोकाडो का पेस्ट बनाकर उसमें एक अंडा मिलाएं। इसे चेहरे पर लगाकर छोड़ दें। यह त्वचा को प्रोटीन, विटामिन और आवश्यक फैटी एसिड प्रदान करती है, जिससे त्वचा मुलायम और स्वस्थ बनी रहती है।

एलोवेरा जेल में विटामिन-ई कैप्सूल का तेल, कुछ बूंदें बादाम तेल और गुलाब जल मिलाकर तैयार की गई क्रीम भी अत्यंत लाभकारी होती है। यह त्वचा की नमी बनाए रखने के साथ-साथ झुर्रियों और महीन रेखाओं को कम करने में मदद करती है।

नारियल तेल और शहद का मिश्रण भी त्वचा के लिए प्राकृतिक वरदान माना जाता है। आधा कप नारियल तेल और तीन चम्मच शहद को हल्का गर्म करके अच्छी तरह मिला लें। रात को इसे चेहरे और गर्दन पर लगाकर सो जाएं। यह त्वचा को गहराई से पोषण देकर प्राकृतिक चमक प्रदान करता है। तैलीय त्वचा के लिए दो चम्मच ताजा एलोवेरा जेल, आधा चम्मच खीरे का रस और दो बूंद टी-ट्री ऑयल का मिश्रण अत्यंत उपयोगी है। यह त्वचा को ठंडक देता है, अतिरिक्त तेल नियंत्रित करता है और मुंहासों की संभावना कम करता है। नारियल तेल, बादाम तेल, गुलाब जल और ग्लिसरीन से भी एक प्रभावी नाइट क्रीम तैयार की जा सकती है। यह विशेष रूप से शुष्क त्वचा वालों के लिए लाभकारी है। हालांकि ध्यान रखें कि क्रीम बहुत अधिक गाढ़ी न हो, क्योंकि इससे त्वचा के रोमछिद्र बंद हो सकते हैं।

पश्चिम रेलवे
अहमदाबाद मण्डल

ईनडोर सिग्नलींग उपकरण के उन्नयन के संबंध में इंटरलॉकिंग प्रणाली के विविध कार्य

निविदा सं. DRM-SnT-ADI-Sig 05 of 2026-27 आमंत्रित करती सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए कार्यरत डीआरएम/एस एण्ड टी ई-निविदाएँ आमंत्रित करते हैं। बोलीदाता उनकी मुल/ संशोधित बोली केवल बंद होने की तारीख एवं समय तक जमा कर सकते हैं, यह निविदा समक्ष मैन्युअल ऑफर स्वीकार नहिं किया जायेगा और कोई भी मैन्युअल ऑफर प्राप्त होने पर ध्यान नहिं दिया जाएगा। **कार्य का नाम:** अहमदाबाद मण्डल की इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणाली द्वारा विरमगाम के इनडोर सिग्नलिंग उपकरण के उन्नयन के संबंध में इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (E.I) प्रणाली की डिजाइन, आपूर्ति, संस्थापन, प्रोग्रामिंग, परीक्षण और कमिनिंग करने का कार्य । **कार्य की अनुमानित लागत:** ₹ 31,48,68,507.65/- (रूपये इकत्तीस करोड़ अड़तालीस लाख अडसठ हजार पांच सौ सात और पैंसठ पैसे केवल) **जमा बयाना राशी:** ₹ 62,97,400/- (रूपये बांसठ लाख सत्तानबे हजार चार सो केवल) **निविदा बंद होने एवं निविदा खुलने की तिथि एवं समय:** दिनांक: 20/07/2026 को 15:00 बजे तक उसके बाद नहिं एवं 20/07/2026 को 15:30 बजे निविदा खोली जायेगी । **ई-निविदा की वेबसाईट:** www.ireps.gov.in

ADI-077

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

शाला प्रवेशोत्सव 2026 से पूर्व वडोदरा की कवि दुला काग सरकारी प्राथमिक शाला में प्रवेश की सभी सीटें फुल, स्कूल के बाहर लगा 'नो एडमिशन' का बोर्ड

▶▶ कवि दुला काग प्राथमिक शाला केन्द्र सरकार की प्राइम मिनिस्टर्स स्कूल्स फॉर राइजिंग इंडिया (पीएम श्री) योजना अंतर्गत समाविष्ट

▶▶ स्कूल में प्रवेश प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों में भारी मांग, हर वर्ष रहता है लंबा वेटिंग लिस्ट

▶▶ विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने के लिए शाला ने शुरू की है अनूठी 'बाल संसद' पहल

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा 23 जून से 25 जून, 2026 के दौरान राज्यव्यापी शाला प्रवेशोत्सव कार्यक्रम आयोजित हो रहा है। प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश योग्य एक भी बच्चा शिक्षा के अधिकार से वंचित न रहे; इस उम्दा उद्देश्य के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2003 में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केळवणी (शिक्षा) रथयात्रा कार्यक्रम की शुरुआत की थी। यह कार्यक्रम नन्हें बच्चों को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ता है।

यद्यपि; शाला प्रवेशोत्सव शुरू हो, उससे पहले ही वडोदरा की कवि दुला काग सरकारी प्राथमिक शाला में प्रवेश के लिए उपलब्ध सभी सीटें भर गई हैं और शाला के मुख्य द्वार के बाहर 'नो एडमिशन' अर्थात प्रवेश बंद का बोर्ड लगा दिया गया है।

जब गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात आती है, तब सामान्यतः केवल निजी विद्यालयों का ही नाम लिया जाता है, परंतु वडोदरा की कवि दुला काग प्राथमिक शाला सरकारी शिक्षा क्षेत्र में उत्कृष्टता का अनूठा उदाहरण बनी है। वर्ष 2010 में स्थापित तथा नगर प्राथमिक शिक्षा समिति द्वारा संचालित इस स्कूल ने अपने निरंतर अच्छे शैक्षणिक प्रदर्शन, आधुनिक ढाँचागत सुविधाओं और विद्यार्थियों के विकास के सर्वांगीण दृष्टिकोण के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त की है। शाला की इन उपलब्धियों के कारण इसे गुजरात सरकार द्वारा शुरू की गई पीएम श्री (प्राइम मिनिस्टर्स स्कूल फॉर राइजिंग इंडिया) योजना में भी शामिल किया गया है।

निजी विद्यालयों के समकक्ष इन्फ्रास्ट्रक्चर सुविधाएँ

कवि दुला काग सरकारी प्राथमिक शाला में अग्रणी निजी विद्यालयों के समकक्ष आधुनिक ढाँचागत सुविधाएँ उपलब्ध हैं। तीन भवनों, 24 कक्षाओं (क्लासरूम्स) और 1,700 से अधिक विद्यार्थियों वाली इस शाला में एयर-कंडीशंड कंप्यूटर एवं विज्ञान प्रयोगशालाएँ, आधुनिक पुस्तकालय, इंटरेक्टिव पैनल से सज्ज स्मार्ट क्लासरूम्स, खेल मैदान, औषधीय वनस्पति उद्यान तथा हरित एवं सुव्यवस्थित कैम्पस जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। पीएम श्री विद्यालय का दर्जा मिलने के बाद शाला की सुविधाओं में और वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त;

शाला को नौ अतिरिक्त क्लासरूम्स भी आवंटित किए गए हैं, जिससे इसकी विद्यार्थी क्षमता 2,000 से अधिक होने की अपेक्षा है।

कवि दुला काग शाला में प्रवेश प्राप्त करने के लिए हर वर्ष रहता है वेटिंग लिस्ट

शैक्षणिक दृष्टि से देखें, तो इस प्राथमिक विद्यालय ने सरकारी मूल्यांकन में नियमित रूप से उच्च ग्रेड प्राप्त किए हैं। साथ ही; नेशनल मीन्स-कम-मैरिट स्कॉलरशिप (एनएमएमएस), पीएसई, सीईटी और ज्ञान साधना जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं में इसके विद्यार्थियों ने उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। इस शाला की शिक्षा का लाभ लेने के लिए हर वर्ष प्रवेश प्राप्त करने की भारी मांग रहती है और विद्यार्थियों का लंबी वेटिंग लिस्ट देखने को मिलता है, जो इस संस्थान में अभिभावकों द्वारा व्यक्त किए गए विश्वास को दर्शाता है। कवि दुला काग प्राथमिक शाला विद्यार्थियों में सॉफ्ट स्किल्स तथा नेतृत्व के गुण विकसित करने पर भी विशेष बल देती है। पीएम श्री योजना में शामिल होने के बाद अब शाला विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए और सक्षम बनेगी।

विद्यार्थियों ने शिक्षा के साथ खेल-कूद एवं कला क्षेत्र में भी स्कूल का नाम रोशन किया

कवि दुला काग प्राथमिक शाला में बच्चों को शिक्षा के साथ खेल-कूद तथा कला के क्षेत्र में भी प्रोत्साहन देकर उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जाता है। खेल महाकुंभ तथा जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में स्कूल के विद्यार्थियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। खो-खो, लंगड़ी, रोप मल्लखंभ तथा अन्य खेलों में विद्यार्थियों ने गुजरात का प्रतिनिधित्व कर अनेक पदक एवं सम्मान प्राप्त किए हैं। पीएम श्री शाला अंतर्गत समाविष्ट होने के बाद कवि दुला काग प्राथमिक शाला को अलग से स्पोर्ट्स शिक्षक उपलब्ध होगा, जो विद्यार्थियों को अधिक अच्छा प्रशिक्षण देने में सहायक होगा। इसके साथ ही; स्कूल विद्यार्थियों को तीरंदाजी (आर्चरी), एथलेटिक्स सहित अन्य खेलों में भी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए तैयार कर रहा है।

बाल संसद : विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्य तथा नेतृत्व क्षमता विकसित करने वाली पहल

इस शाला ने अनूठी 'बाल संसद' पहल शुरू की है, जो विद्यार्थियों में लोकतांत्रिक मूल्यों, नेतृत्व क्षमता और जिम्मेदारी की भावना विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। बाल संसद के विद्यार्थी मध्याह्न भोजन, प्रार्थना, स्वच्छता, बगीचा, स्वास्थ्य, जल प्रबंधन, बुलेटिन बोर्ड आदि विभिन्न समितियों में अपना योगदान देते हैं। इस व्यवस्था द्वारा विद्यार्थी अपनी जिम्मेदारियाँ सक्रिय रूप से निभाकर शाला के प्रबंधन में सहभागी बनते हैं। इसके अतिरिक्त; सप्ताह के दौरान समितियों के बीच प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं और श्रेष्ठ कार्य करने वाली समिति को सर्वाधिक स्टार्स दिए जाते हैं। यह प्रक्रिया विद्यार्थियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करती है तथा शाला के विकास के लिए रचनात्मकता को प्रोत्साहन देती है।

कला महाकुंभ में वर्ष 2018 से 2025 तक शाला की बेटियों (छात्राओं) ने रास-गरबा प्रतियोगिता में तहसील, जिला और राज्य स्तर पर शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। विवाह गीत जैसी अन्य प्रतियोगिताओं में भी शाला की छात्राएँ विजेता बनी हैं। पीएम श्री शाला के रूप में अब शाला को संगीत शिक्षक का भी आवंटन होगा, जिससे स्कूल के बच्चे संगीत प्रतियोगिताओं के लिए भी तैयार होंगे।

विकसित भारत के निर्माणकर्ताओं को तैयार करने में शाला का उल्लेखनीय योगदान

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल, शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती रिवाबा जाडेजा, पूर्व शिक्षा मंत्री श्री प्रफुलभाई पानशेरिया एवं श्री कुबेर डिंडोर ने भी शाला के उत्कृष्ट प्रयासों का संज्ञान लिया है। इसके अतिरिक्त; वरिष्ठ नेता एवं महानुभाव भी समय-समय पर इस विद्यालय का दौरा कर शिक्षकों व विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हैं। हाल ही में ब्रिक्स के प्रतिनिधि ने भी शाला का दौरा किया था। पीएम श्री योजना अंतर्गत शाला को और बल मिलेगा तथा वह नए संसाधनों एवं अवसरों के साथ विकसित भारत के निर्माणकर्ताओं को तैयार करने में उल्लेखनीय योगदान देगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल शाला प्रवेशोत्सव-2026 के दूसरे दिन आदिजाति क्षेत्र दाहोद जिले के मोटी खरज गांव की शाला में बच्चों का नामांकन कराएंगे

▶▶ मोटी खरज में 'प्रगति का प्रवेशोत्सव' अंतर्गत बालवाटिका में 67 सहित कुल 318 बच्चों का शाला प्रवेश होगा

▶▶ आदिजाति दाहोद जिले की नौ तहसीलों में शाला प्रवेशोत्सव अंतर्गत 77,821 बालिकाओं सहित कुल 1.57 लाख प्रवेश पात्र बच्चों का शाला नामांकन कराया जाएगा

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल राज्यव्यापी शाला प्रवेशोत्सव-कन्या केळवणी महोत्सव की 24वीं कड़ी के दूसरे दिन, बुधवार 24 जून को दाहोद जिले के आदिजाति क्षेत्र मोटी खरज गांव में बच्चों का शाला नामांकन कराने में सहभागी होंगे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में वर्ष 2003 से प्रारंभ किए गए शाला प्रवेशोत्सव अंतर्गत इस वर्ष 2026 का शाला प्रवेशोत्सव 'प्रगति का प्रवेशोत्सव' के रूप में मनाया जा रहा है। मुख्यमंत्री श्री इस प्रवेशोत्सव अंतर्गत मोटी खरज गांव में 67 बच्चों के आंगनवाड़ी प्रवेश सहित कुल 318 बच्चों का शाला प्रवेश कराएंगे।

राज्यव्यापी शाला प्रवेशोत्सव की इस 24वीं कड़ी में पूरे राज्य में लगभग 28 लाख 58 हजार प्रवेश पात्र बच्चों-विद्यार्थियों को शाला प्रवेश दिलाया जाना है। तदनुसार; आदिजाति क्षेत्र दाहोद जिले की 9 तहसीलों में 77,821 बालिकाओं सहित कुल 1 लाख 57 हजार 948 विद्यार्थियों को इस त्रिदिवसीय अभियान में शाला प्रवेश कराया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल बुधवार 24 जून को सुबह 10 बजे मोटी खरज की प्राथमिक शाला में पहुंचकर प्रवेश पात्र बच्चों को शाला में प्रवेश दिलाने के जन-उत्सव में शामिल होंगे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वडनगर के हेरिटेज रिस्टोरेशन प्रोजेक्ट की समीक्षा की : ऐतिहासिक विरासत का वैज्ञानिक ढंग से होगा संरक्षण

वडनगर के प्राचीन स्थापत्य को दिया जाएगा आधुनिक स्वरूप : जनभागीदारी के अभिनव दृष्टिकोण से वैश्विक पटल पर चमकेगी वडनगर की सांस्कृतिक विरासत

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मंगलवार को वडनगर की ऐतिहासिक धरोहर को संरक्षित करने के लिए चल रहे महत्वाकांक्षी हेरिटेज प्रिसिंक्ट डेवलपमेंट और फसाड रिस्टोरेशन प्रोजेक्ट का अवलोकन किया। राज्य सरकार की 'स्वर्णिम जयंती मुख्यमंत्री शहरी विकास योजना' के अंतर्गत पायलट प्रोजेक्ट के रूप में लागू इस कार्यक्रम के जरिए वडनगर की प्राचीन इमारतों और गलियों को उनके मूल वैभव के साथ पुनर्स्थापित किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर निर्माण कार्य का बारीकी से निरीक्षण करते हुए कामकाज की प्रगति को लेकर संतोष व्यक्त किया और वडनगर की सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान देने की मंशा दोहराई।

इस प्रोजेक्ट का मुख्य उद्देश्य वडनगर के हेरिटेज क्षेत्रों की विशिष्ट पहचान और पारंपरिक स्थापत्य शैली को संरक्षित रखना है। इस मिशन के तहत 'विरासत मूल्य' वाली निजी संपत्तियों और रिहायशी मकानों का वैज्ञानिक पद्धति से जीर्णोद्धार किया जा रहा है। जीर्णोद्धार की इस पूरी प्रक्रिया में उस समय की मूल्य स्थापत्य शैली और पारंपरिक निर्माण कार्य पद्धतियों का उपयोग किया गया है। विशेषकर, स्थानीय सामाग्री और कुशल कामगारों को प्राधमिकता देकर प्राचीन नक्काशी और निर्माण कार्य को जीवंत रखने पर विशेष जोर दिया गया है, ताकि आने वाली पीढ़ियां इस भव्य विरासत को देख सके।

ऐतिहासिक विरासत के संरक्षण की इस मुहिम में राज्य सरकार ने जनभागीदारी के विशिष्ट मॉडल को लागू करके सफलता हासिल की है। इस योजना के अंतर्गत होने वाले कुल खर्च की 80 फीसदी राशि राज्य सरकार द्वारा सहायता के तौर पर दी जाती है, जबकि बाकी की 20 फीसदी राशि संबंधित संपत्ति के लाभार्थियों की ओर से दिया जाता है। सरकार के इस दृष्टिकोण के कारण स्थानीय नागरिकों में अपनी विरासत के संरक्षण के प्रति गौरव और स्वामित्व का भाव पैदा हुआ है। इस सफलता को देखते हुए 100 अन्य संपत्तिधारकों ने भी स्वतः ही इस प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने और अपनी संपत्तियों का जीर्णोद्धार कराने के लिए उत्सुकता दिखाई है।

वडनगर के इस पूरे प्रोजेक्ट को चार महत्वपूर्ण जोन में बांटकर काम किया जा रहा है। जिनमें प्रेरणा स्कूल परिसर, सुप्रसिद्ध कीर्ति तोरण परिसर, पत्थर नी हवेली परिसर और शर्मिष्ठा तालाब का तट जैसे ऐतिहासिक स्थान शामिल हैं।

अब तक हुई प्रगति के अनुसार, कुल 55 ऐतिहासिक इमारतों के जीर्णोद्धार का काम सफलतापूर्वक पूरा कर लिया गया है। मौजूदा चरण में 52 दूसरी इमारतों पर काम जोरों से चल रहा है। वहीं, आने वाले समय में दो और इमारतों पर जीर्णोद्धार की प्रकिया शुरू करने की योजना है, जिससे वडनगर का पूरा हेरिटेज पट्टा एक नए अवतार में नजर आएगा।

शाला प्रवेशोत्सवः आदरणीय श्री नरेंद्र मोदी जी की वह विरासत जो आज 'प्रगति का प्रवेशोत्सव' बन गई है

इतिहास की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अक्सर उन क्षणों में रचा जाता है जिन्हें उस वक्त कोई असाधारण नहीं समझता। एक बच्चे का पहली बार विद्यालय में प्रवेश भी देखने में एक साधारण सी गतिविधि लगती है। किंतु जो आँखें थोड़ा गहरा देखती हैं, वे जानती हैं कि उस एक कदम में कितनी पीढ़ियों का भाग्य समाया होता है। वह द्वार केवल एक बच्चे के लिए नहीं खुलता बल्कि उसके साथ उस परिवार की संभावनाएँ खुलती हैं, उस समाज की आकांक्षाएँ खुलती हैं और आने वाले कल की अनगिनत संभावनाएँ भी उस क्षण जन्म लेती हैं। यही कारण है कि जब हम गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री एवं हमारे वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदृष्टि से प्रारंभ हुए शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केलवणी रथयात्रा के 23 वर्षों के इस गौरवशाली सफर पर दृष्टिपात करते हैं तो यह किसी सरकार के अभियान की सफल-गाथा मात्र नहीं लगती बल्कि यह उस सामाजिक रूपांतरण की कहानी प्रतीत होती है जिसने गुजरात की कई पीढ़ियों के जीवन को नई दिशा और नई धुरी प्रदान की है।

वर्ष 2003 में, जब तत्कालीन मुख्यमंत्री और वर्तमान में देश के यशस्वी माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इस अभियान की नींव रखी, तब राज्य अनेक सामाजिक और विकासात्मक चुनौतियों का सामना कर रहा था। शिक्षा का क्षेत्र भी उन महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक था। वर्ष 2001-02 में विद्यालय छोड़ने की दर 37 प्रतिशत से अधिक थी अर्थात् लगभग हर तीसरा बच्चा शिक्षा की मुख्यधारा से बाहर हो जाता था। अनेक परिवार शिक्षा की उपयोगिता को लेकर अभी भी संशय में थे और बेटियों की शिक्षा सामाजिक एवं आर्थिक बाधाओं के बोझ तले और भी अधिक प्रभावित थी।

ऐसे समय में हमारे लोकप्रिय जननेता माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने शाला प्रवेशोत्सव के रूप में एक ऐसा विचार सामने रखा, जो सुनने में भले ही सरल था, लेकिन उसके परिणाम आगे चलकर अत्यंत क्रांतिकारी सिद्ध हुए। "शिक्षा केवल सरकार का विषय नहीं बल्कि समाज का संकल्प बनना चाहिए।" यह माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी का वही विचार था जिसने इस अभियान को एक प्रशासनिक कार्यक्रम से ऊपर उठाकर जन-अभियान का स्वरूप दिया। शाला प्रवेशोत्सव की सबसे विशिष्ट और अनुकरणीय विशेषता यह रही कि इसने शासन और समाज के बीच की दूरी को मिटा दिया। मुख्यमंत्री से लेकर मंत्रियों तक, विधायकों से लेकर IAS, IPS और IFS अधिकारियों तक सभी गाँव-गाँव पहुँचे, परिवारों से मिले और बच्चों का हाथ थामकर उन्हें विद्यालय के द्वार तक ले गए। और पिछले 23 वर्षों से यह परंपरा निर्बाध जारी है। किसी भी विचार की वास्तविक शक्ति उसके शब्दों में नहीं बल्कि उसके परिणामों में दिखाई देती है। पिछले 23 वर्षों में शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केलवणी रथयात्रा ने भी अपनी सार्थकता को इसी कसौटी पर सिद्ध किया है। इस पहल की सबसे बड़ी उपलब्धि केवल विद्यालयों तक बच्चों की बढ़ती पहुँच नहीं है, बल्कि उन लाखों जीवनों में आया वह सकारात्मक परिवर्तन है, जिसे शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केलवणी रथयात्रा के माध्यम से शिक्षा ने संभव बनाया है। वर्ष 2003 में तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा से जिन बच्चों ने पहली बार विद्यालय का द्वार पार किया था, आज उनमें से कोई डॉक्टर है, कोई इंजीनियर, कोई शिक्षक है तो कोई सफल उद्यमी; लेकिन इन सब की साझा पहचान यह है कि माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी की दूरदर्शी सोच और शाला प्रवेशोत्सव - कन्या केलवणी रथयात्रा जैसे प्रयासों ने उन्हें शिक्षा के माध्यम से अपने सपनों को साकार करने का अवसर प्रदान किया।

किसी समाज में सबसे गहरा और स्थायी परिवर्तन तब आता है जब उसकी बेटियाँ आगे बढ़ती हैं। यही कारण है कि श्री मोदी जी ने प्रारंभिक दौर में ही यह समझ लिया था कि गुजरात के भविष्य को सशक्त बनाना है तो बेटियों की शिक्षा को जनआंदोलन का स्वरूप देना होगा। इसी सोच के साथ कन्या केलवणी रथयात्रा को शाला प्रवेशोत्सव का एक अविभाज्य अंग बनाया गया। पिछले दो दशकों में गुजरात में बेटियों की शिक्षा के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में जो रूपांतरण आया है वह केवल सरकारी प्रयासों का नहीं बल्कि एक सामूहिक चेतना के जागरण का प्रमाण है। आज अभिभावक बेटियों को केवल विद्यालय ही भेजना नहीं चाहते बल्कि वे उन्हें उच्च शिक्षा की ऊँचाइयों तक पहुँचते हुए भी देखना चाहते हैं।

आदरणीय श्री मोदी जी द्वारा प्रारंभ किए गए इस सामाजिक परिवर्तन के संकल्प को और सुदृढ़ करने के लिए राज्य सरकार ने नमो लक्ष्मी योजना प्रारंभ की है, जिसके अंतर्गत कक्षा 9 से 12 तक की बेटियों को 50,000 रुपये तक की आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। साथ ही, विज्ञान विषय में अध्ययनरत छात्रों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से नमो सरस्वती विज्ञान साधना योजना भी लागू की गई है, जिसके अंतर्गत कक्षा 11 और 12 में विज्ञान संकाय में अध्ययन के इच्छुक विद्यार्थियों को दो वर्षों के दौरान 25,000 रुपये तक की सहायता प्रदान की जाती है। क्योंकि हमारा संकल्प है कि आर्थिक परिस्थितियाँ अब किसी भी बच्चे की प्रतिभा और उसके सपनों की उड़ान में बाधा न बन सकें।

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का विद्यालय में केवल नामांकन सुनिश्चित करना नहीं होता बल्कि उसकी वास्तविक सार्थकता तब सिद्ध होती है जब बच्चा विद्यालय में रहते हुए सीखने की जिज्ञासा, सोचने की स्वतंत्रता और अपने भीतर निहित संभावनाओं को पहचानने की दृष्टि विकसित कर सके। इसी सोच के साथ वर्ष 2009 में तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में प्रारंभ हुआ गुणोत्सव आज गुणोत्सव 2.0 (GSQAC) के रूप में विकसित हो चुका है और विद्यालयों में गुणवत्ता आधारित मूल्यांकन की एक सुदृढ़ परंपरा स्थापित कर चुका है। इसी क्रम में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप विकसित स्कूल क्वालिटी असेसमेंट एंड एश्योरेंस फ्रेमवर्क (SQAAF) के अंतर्गत विद्यालयों की गुणवत्ता के मूल्यांकन हेतु 211 मानक निर्धारित किए गए हैं, जो बच्चों के समग्र विकास, सीखने की गुणवत्ता और शैक्षणिक उत्कृष्टता को सुनिश्चित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

इतना ही नहीं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप गुजरात ने 5+3+3+4 शैक्षणिक संरचना भी लागू कर दी है और बालवाटिका का सार्वभौमिक क्रियान्वयन भी हो रहा है। वहीं, आधुनिक तकनीक ने भी इस यात्रा में एक शक्तिशाली भूमिका निभाई है। डिजिटल रूप से उपलब्ध जन्म पंजीकरण प्रणाली और चाइल्ड ट्रैकिंग सिस्टम के एकीकरण से प्रत्येक बच्चे तक पहुँच और उसकी सतत निगरानी सुनिश्चित हो रही है। इसके साथ ही, गुजरात का विद्या समीक्षा केंद्र, जो भारत की पहली आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस संचालित शैक्षणिक निगरानी व्यवस्था है, पूरी शिक्षा प्रणाली की रियल-टाइम मॉनिटरिंग कर रहा है। इसी व्यवस्था के अंतर्गत AI आधारित अर्ली वॉर्निंग सिस्टम संभावित ड्रॉपआउट होने वाले बच्चों की पूर्व-पहचान कर समय रहते आवश्यक मार्गदर्शन को भी सुनिश्चित कर रहा है। इस तरह से, राज्य सरकार के ये प्रयास दर्शाते हैं कि हमने शाला प्रवेशोत्सव की मूल भावना को आधुनिक युग में एक नई प्रासंगिकता दी है।

किसी भी अभियान की सच्ची ताकत तब सिद्ध होती है जब समाज स्वयं उसका भागीदार बन जाए। पिछले 23 वर्षों में जनता और विभिन्न संस्थाओं द्वारा विद्यालयों को लगभग 326 करोड़ रुपये का योगदान प्राप्त हुआ है। इसी तरह, विद्यालय प्रबंधन समितियों में 75 प्रतिशत अभिभावकों की भागीदारी और 50 प्रतिशत महिला प्रतिनिधित्व ने शिक्षा को वास्तव में एक सामुदायिक आंदोलन का स्वरूप दे दिया है। इतना ही नहीं, गुजरात सरकार की मुख्यमंत्री ज्ञान साधना और ज्ञान सेतु मेरिट स्कॉलरशिप जैसी योजनाएँ आज उन मेधावी विद्यार्थियों के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त कर रही हैं जो प्रतिभा तो रखते हैं किंतु संसाधनों की कमी से सपनों को विराम देने पर विवश हो सकते थे।

हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने एक बार कहा था, "यदि हमें विकसित भारत का निर्माण करना है, तो हमें अपने बच्चों के सपनों को शक्ति देनी होगी।" शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केलवणी रथयात्रा की 23 वर्षों की यह यात्रा उसी विचार का सबसे सजीव और प्रामाणिक साक्ष्य है। एक बीज बोने वाला जानता है कि वह उसकी छाँव में नहीं बैठेगा, फिर भी वह उसे पूरे विश्वास के साथ धरती में रोपता है। शाला प्रवेशोत्सव और कन्या केलवणी रथयात्रा भी आदरणीय मोदी जी द्वारा बोया गया ऐसा ही एक दूरदर्शी बीज है, जो आज शिक्षा, समान अवसर और सामाजिक जागरण के एक विशाल वटवृक्ष के रूप में हमारे सामने खड़ा है, जिसकी छाया में गुजरात की नई पीढ़ियाँ अपने सपनों को आकार दे रही हैं।

समय बीतता है, नेतृत्व बदलते हैं, योजनाएँ भी बदलती हैं, लेकिन कुछ विचार ऐसे होते हैं जो पीढ़ियों की नियति का हिस्सा बन जाते हैं। यह पहल उसी विचार की जीवंत अभिव्यक्ति है जिसने लाखों बच्चों को अवसर, लाखों बेटियों को आत्मविश्वास और पूरे समाज को एक नई दिशा प्रदान की है। भविष्य की पीढ़ियाँ जब गुजरात की विकास यात्रा का इतिहास लिखेंगी तो प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के ये प्रयास हमेशा सामाजिक क्रांति के रूप में स्मरण किए जाएँगे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने वडनगर में निर्माणाधीन अत्याधुनिक 'संगीत संग्रहालय' की प्रगति की समीक्षा की

▶▶ ताना-रीरी की पावन स्मृति में आकार ले रहा है अत्याधुनिक संगीत संग्रहालय

▶▶ भारतीय संगीत विरासत का वैश्विक केंद्र बनेगा वडनगर : 360 डिग्री इमर्सिव प्रोजेक्शन तथा आठ विशेष गैलरियों के माध्यम से संगीत यात्रा जीवंत होगी

▶▶ वडनगर की ऐतिहासिक धरती पर आगंतुक आदिम युग से आधुनिक काल तक की संगीत यात्रा का अनुभव कर सकेंगे; मुख्यमंत्री ने विभिन्न गैलरियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया

गांधीनगर : गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने मंगलवार को ऐतिहासिक नगर वडनगर में आकार ले रहे अत्याधुनिक 'संगीत संग्रहालय' का प्रत्यक्ष दौरा कर निर्माण कार्य की प्रगति की बारीकी से समीक्षा की। गुजरात राज्य के संग्रहालय निदेशक कार्यालय के मार्गदर्शन में तैयार किया जा रहा यह संग्रहालय भारत की समृद्ध एवं विविधतापूर्ण संगीत परंपरा के संरक्षण और संवर्धन के लिए एक महत्वपूर्ण वैश्विक माध्यम बनने जा रहा है। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर संग्रहालय के विभिन्न विभागों तथा प्रदर्शित की जाने वाली सामग्री के संबंध में अधिकारियों से विस्तृत जानकारी प्राप्त की और परियोजना के कार्यों को समयबद्ध रूप से पूर्ण करने के लिए आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया।

यह महत्वाकांक्षी संगीत संग्रहालय वडनगर की प्रसिद्ध लोकगायिका बहनों ताना-रीरी की पावन स्मृति को समर्पित किया गया है। भारतीय संगीत की हजारों वर्ष पुरानी यात्रा को आदिम युग से लेकर आधुनिक काल तक के विभिन्न चरणों में यहां एक अनूठे और अनुभवात्मक स्वरूप में प्रस्तुत किया जाएगा।

वडनगर की ऐतिहासिक एवं संगीत परंपरा से वैश्विक आगंतुकों को परिचित कराने के लिए यहां ताना-रीरी के गौरवपूर्ण जीवन और उनकी अद्वितीय संगीत साधना का विशेष परिचय भी प्रस्तुत किया गया है। यह प्रकल्प केवल एक प्रदर्शनी तक सीमित न रहकर नई पीढ़ी को भारतीय संगीत के मूलभूत तत्वों से जोड़ने का एक सशक्त सांस्कृतिक माध्यम बनेगी।

संग्रहालय के प्रमुख आकर्षण के रूप में आठ विशेष विषय-आधारित गैलरियां तैयार की जा रही हैं, जो आगंतुकों को संगीत के विभिन्न आयामों का गहन अनुभव प्रदान करेंगी। इनमें आदिम संगीत गैलरी में मानव सभ्यता के प्रारंभिक काल की ध्वनियों तथा निसर्ग संगीत गैलरी में प्रकृति के स्वरों जैसे पवन, वर्षा और पक्षियों के कलरव को स्थान दिया गया है। लोक संगीत गैलरी में भारत के विभिन्न प्रांतों के पारंपरिक लोक वाद्यों और गीतों का प्रदर्शन होगा, जबकि भक्ति संगीत गैलरी में भजन और सूफी संगीत जैसे आध्यात्मिक आयामों को प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त; जन संगीत गैलरी सामाजिक आंदोलनों में संगीत के प्रभाव को स्पष्ट करेगी, जबकि राग संगीत गैलरी में भारतीय शास्त्रीय संगीत के राग-रागिनियों के वैज्ञानिक पक्षों को उजागर किया जाएगा। संगम संगीत गैलरी के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों के मेल से विकसित नए संगीत प्रवाहों की झलक प्रस्तुत की जाएगी।

तकनीकी दृष्टि से यह संग्रहालय विश्वस्तरीय अत्याधुनिक सुविधाओं से सज्ज किया जा रहा है। इसमें 360 डिग्री इमर्सिव प्रोजेक्शन, इंटरैक्टिव इंस्टॉलेशन तथा उच्च गुणवत्ता वाली ऑडियो-विजुअल प्रस्तुतियों द्वारा आगंतुकों को संगीत की अद्भुत दुनिया का अनुभव कराया जाएगा। संकुल में संगीत प्रेमियों और शोधकर्ताओं के लिए संगीत पुस्तकालय, रिकॉर्डिंग स्टूडियो तथा शैक्षणिक गतिविधियों के लिए विशेष क्षेत्र भी विकसित किए गए हैं। खुले परिसर में साउंड इंस्टॉलेशन तथा भारत के महान संगीतकारों के दुर्लभ वाद्यों का प्रदर्शन इस स्थान को संगीत प्रेमियों के लिए एक तीर्थस्थल के रूप में स्थापित करेगा। यह परियोजना पूर्ण होने के बाद वडनगर वैश्विक मानचित्र पर भारतीय संगीत विरासत के एक जीवंत और प्रेरणादायी सांस्कृतिक केंद्र के रूप में उभरेगा।

पीपावाव रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा CSR परियोजना के अंतर्गत बाल मंदिर एवं किड्स हट विद्यालयों को शैक्षणिक सामग्री एवं आधारभूत सुविधाएं प्रदान

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल द्वारा संचालित बाल मंदिर एवं किड्स हट विद्यालयों के नन्हे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु किए जा रहे प्रयासों को और सुदृढ़ करते हुए पीपावाव रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड (PRCL) ने अपने कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR) कार्यक्रम के अंतर्गत दोनों विद्यालयों को विभिन्न शैक्षणिक एवं आधारभूत सुविधाओं से संबंधित सामग्री उपलब्ध कराई है। साथ ही विद्यालय परिसरों का सौंदर्यीकरण करते हुए दीवारों पर आकर्षक एवं शिक्षाप्रद चित्रकारी भी करवाई गई है।

मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन एवं पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), भावनगर मंडल की अध्यक्षा श्रीमती शालिनी वर्मा के प्रयासों से दिनांक 23 जून, 2026 को आयोजित कार्यक्रम में PRCL द्वारा दोनों विद्यालयों के लिए शैक्षणिक पेंटिंग्स, स्कूल बेंच, कार्यालयीन बेंच, कालीन तथा बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के खिलौने प्रदान किए गए। इसके अतिरिक्त विद्यालयों में अध्ययनरत सभी बच्चों को मिल्टन कंपनी की उच्च गुणवत्ता वाली 230 पानी की बोतलें भी वितरित की गईं, जो पानी को लंबे समय तक ठंडा रखने में सहायक हैं।

उपलब्ध कराई गई सामग्री में कुल 20 स्कूल बेंच, 3 कार्यालयीन बेंच, 8 कालीन, शैक्षणिक पेंटिंग्स तथा 24 विभिन्न प्रकार के खिलौने शामिल हैं। विद्यालयों की दीवारों पर बनाई गई शैक्षणिक चित्रकारियों में बच्चों की शिक्षा से संबंधित मूलभूत विषयों को रोचक एवं आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जिससे उनके सीखने की प्रक्रिया को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

इस अवसर पर पीपावाव रेल कॉर्पोरेशन लिमिटेड की ओर से श्रीमती सीमा कुमार, प्रबंध निदेशक, श्री मुकुल जैन, वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्रीमती लीना नरवाल, कंपनी सचिव तथा भावनगर स्थित PRCL शाखा के चार अन्य प्रतिनिधि तथा विवेकानंद रिसर्च प्रशिक्षण संस्थान (VRTI) की ओर से श्री नितिन दवे, अध्यक्ष, श्री मनुभाई चौधरी, मुख्य समन्वयक, श्री किशोरसिंह तथा श्री नरेन्द्रसिंह झाला, CSR परियोजना समन्वयक भी उपस्थित रहे।